ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक–
वेद, यज्ञ–योग–साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

अप्रैल 2019

मूल्य 15 रू.

# आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

## बसंत ऋतु यज्ञ एवं योग साधना शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

प्रथम चित्र में दाएं से श्री रवि जी आर्य अंजली प्रोपर्टीज, बहादुरगढ़, श्री अशोक कुमार जी गुप्ता, पूर्व चेयरमैन नगर, परिषद, बहादुरगढ़, श्री सत्यपाल जी वत्सार्य, बहादुरगढ़, श्री रविन्द्र कुमार जी हसीजा, गुरुग्राम हरियाणा एवं श्री कन्हैया लाल जी आर्य उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़।

द्वितीय चित्र में श्री नरेश जी कौशिक एम.एल.ए. हल्का बहादुरगढ़ को स्मृति चिन्ह् एवं धार्मिक साहित्य देकर सम्मानित करते हुए दाएं से श्री वानप्रस्थी विश्वमुनि जी पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी, मुख्याधिष्ठाता आश्रम, श्री आचार्य चांद सिंह जी, श्री सत्यपाल जी वत्सार्य, श्री यशपाल जी गांधी, श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती एवं चतुर्भुज जी बंसल।

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें    ओ३म्    आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

**राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र**
**आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु चार दिवसीय पावन ऊर्जामय**

# निःशुल्क योग एवम् शंका समाधान शिविर

## ऋग्वेद बृहद् यज्ञ

## गुरुवार 27 जून से रविवार 30 जून 2019 तक

सानिध्यः- **स्वामी धर्ममुनि जी महाराज** (मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)
योग प्रशिक्षण एवम् शंका समाधानः-**श्री स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक**
(दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ अहमदाबाद, गुजरात द्वारा)।

# आत्मशुद्धि-पथ के आजीवन सदस्य बने

1077
**श्री उम्मेद सिंह जी आर्य**
सुपुत्र श्री मुंशीराम जी
गुभाना माजरी, झज्जर, हरि.

1078
**श्री कन्हैया लाल जी आर्य**
शिवाजी नगर, गुरुग्राम
हरियाणा

1079
**श्री आर.एल. जी बत्रा**
मॉडल टाऊन, रोहतक
हरियाणा

1080
**श्रीमती सोना देवी जी आर्या**
सैक्टर-6, बहादुरगढ़
झज्जर, हरियाणा

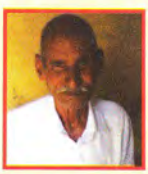

1081
**श्री सुभाषचन्द्र जी**
सैनी सर्विस स्टेशन बहादुरगढ़
हरियाणा

1082
**आर्य समाज मॉडल टाऊन**
**रोहतक, हरियाणा**

प्रिय बन्धुओं! मास अप्रैल में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी मई अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या **IFSC-ALLA0211948** में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

# आत्म-शुद्धि-पथ ( मासिक )

चैत्र-वैशाख सम्वत् 2076 अप्रैल 2019

सृष्टि सं. 1972949120 दयानन्दाब्द 195

वर्ष-18 ) संस्थापक—स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी ( अंक-4

( वर्ष 49 अंक 4 )

*प्रधान सम्पादक*

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' ( मो. 9416054195 )

❖

सम्पादक:

श्री राजवीर आर्य ( मो. 9811778655 )

❖

सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव ( मो. 9896578062 )

❖

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री ( मो. 08053403508 )

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव ( हरि. )

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक : 7100 रुपये

15 वर्ष के लिए : 1500 रुपये

पंचवार्षिक : 700 रुपये

वार्षिक : 150 रूपये

एक प्रति : 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

*कार्यालय* : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला—झज्जर ( हरियाणा ) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

## अनुक्रमणिका

| विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|
| समाचार | 4 |
| अपराधों से बचें | 6 |
| क्या पाकिस्तान रूपी समस्या का कोई समाधान है? | 7 |
| मुक्ति से पुनरावृत्ति | 9 |
| ईश्वर की शरण ही सुखदायी है | 12 |
| वेद द्वारा जीने की कला | 14 |
| असीमित अधिकार अराजकता को जन्म देते हैं | 17 |
| संयुक्त परिवार में हो रहा विघटन, बिखराव | 21 |
| अथर्ववेद में मानव रोग-चिकित्सा की औषधियाँ | 22 |
| आपकी सन्तान ही देश का भविष्य है | 25 |
| हंसो और हंसाओ | 26 |
| माता-पिता अड़चन नहीं आपके दिल की धड़कन है | 27 |
| कविता अभिनन्दन | 28 |
| अंधविश्वासों से दूर रहें | 29 |
| महात्मा हंसराज | 33 |
| दान सूची | 34 |

### विज्ञापन दर

| | |
|---|---|
| पिछला कवर पृष्ठ | 5,100 रुपये |
| अंदर का कवर पृष्ठ | 3,100 रुपये |
| पूरा पृष्ठ अंदर | 2,100 रुपये |
| आधा पृष्ठ | 1,100 रुपये |
| चतुर्थ भाग | 600 रुपये |

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

# बसंत ऋतु यज्ञ एवं योग साधना शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

**उद्‌घाटन समारोह:** यजमान (1) श्री कन्हैयालाल जी आर्य श्रीमती चन्द्रवती आर्या गुड़गांव (2) श्री रविन्द्र कुमार जी हसीजा श्री पूनम हसीजा, गुड़गांव (3) श्री कृष्ण चंद जी श्रीमती कृष्णा देवी रखेजा, गुड़गांव।

25 मार्च सोमवार सायं 4 बजे यज्ञ प्रारंभ हुआ। 5 बजे शिविर उद्‌घाटन प्रसिद्ध समाज सेवी व नगर परिषद् के पूर्व चेयरमैन श्री अशोक कुमार जी गुप्ता, श्री रवि कुमार जी अंजली प्रोपर्टीज, श्री रविन्द्र कुमार जी हसीजा के कर-कमलों द्वारा हुआ। शिविर स्वामी धर्ममुनि जी मुख्य अध्याष्ठिता आत्म शुद्धि आश्रम के सान्धिय में आरंभ हुआ। योग शिक्षक एवं यज्ञ ब्रह्म स्वामी विदेह योगी जी कुरूक्षेत्र के सात दिवसीय कार्यक्रम का संचालन कुशलता-पूर्वक किया गया। उद्‌घाटन समारोह में उपरोक्त मानुभाओं के अतिरिक्त श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य, श्री स्वामी रामानन्द जी, श्री पुरुषार्थ मुनि जी आदि के भी व्याख्यन हुए। श्री आचार्य विक्रमदेव शास्त्री, श्री रवि जी शास्त्री, कर्ण देव आर्य, हरिशंकर द्वारा यज्ञ आरंभ होने से पूर्ण-आहुति तक वेद्-पाठ मधुर स्वर में किया गया।

**यज्ञ एवं योग शिविर का प्रतिदिन का समय रहा:-** प्रात: 5 से 7 ध्यान योग आसन-प्राणायाम एवं यज्ञ प्रात: 7.30 से 10.00 बजे तक एवं सायं 4.00 से 6.30 बजे तक निरंतर स्वामी विदेह योगी जी के ब्रह्मत्व में चलता रहा। नित्य-प्रति यज्ञमान आसनों को भिन्न-भिन्न स्थानों से पधार कर सुशोभित करते रहे। श्री पदमचंद जी आर्य, श्रीमती सुमित्रा देवी जी आर्या गुड़गांव से, वानप्रस्थी पुरुषार्थी मुनि जी, श्री रामदेव जी आर्य, श्रीमती भारती सिसोदिया, श्री कैप्टन महेन्द्र कुमार जी पंवार अमेरिका वाले आश्रम से श्री राधेश्याम जी शर्मा, कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत, श्री अभिमन्यु जी कोच श्रीमती सुदेश संदुजा, श्री अशोक कुमार जी जून बहादुरगढ़ से पधारे मा. धूम्र से आर्य गुलिया का बादली से आगमन हुआ। शिविर मध्य, श्री रामदेव जी आर्य, श्री वानप्रस्थी, पुरुषार्थ मुनि, श्री राधेश्याम जी शर्मा, श्रीमती सुदेश संदुजा, श्रीमती भारती सिसोदिया, श्रीमती सुमित्रा देवी आर्या, श्री कृष्ण चंद जी रखेजा, श्री रामवेश्वर जी आर्या भजनोपदेशक, श्री भगवान दास जी शर्मा एवं आश्रम के बालकों के मधुर भजनों का कार्य क्रम चलता रहा और श्री स्वामी विदेह योगी और श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य, श्री नारायण सिंह जी आर्य आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, श्री रवि शास्त्री जी, आचार्य चांद सिंह जी आदि वक्ताओं के व्याख्यान होते रहे। शिविर मध्य श्री मा. रामपाल जी आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा। श्री सत्यानन्द जी आर्य, श्रेष्ठी प्रधान आश्रम ट्रस्ट, विशेष अतिथि पधारे!

**यज्ञ एवं योग शिविर समापान समारोह:- हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न:-** 25 मार्च से चल रहे योग शिविर बृहद-यज्ञ का समापन 31 मार्च रविवार को निर्विधण सम्पन्न हुआ यज्ञ पूर्ण-आहुति 8.00 से 10.00 बजे तक मुख्य यजमान श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य एवम् श्रीमती फूलवती देवी रहे। तत्पश्चात समापन समारोह आरंभ हुआ। सर्व प्रथम भजनों का कार्यक्रम रहा। ब्रह्मचारी चंदेल नरेला, श्रीमती फुलवती, श्रीमती रोशनी देवी जी, श्री लक्ष्मण सिंह जी संगीत, आचार्य, श्री भगवान दास जी संगीत आचार्य, आचार्य चांद सिंह जी, श्री सुखपाल जी आर्य, श्री पं. जय भगवान जी, श्री पं. रमेश चंद जी वैदिक आदि गायकों के मधुर भजनों का तालियाँ-बजाकर श्रोताओं ने आनन्द लिया। अंत में आश्रम के ब्रह्मचारियों ने दिल को छु-लेने वाला मधुर भजन सुनाया। श्रोताओं ने बालकों का भजन सुनते हुए तालियां बजाकर बच्चों का उत्साह वर्धण किया।

श्री स्वामी रामानन्द जी सरस्वती ने व्याख्यान देते हुए कहा की मनुष्य का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। हमें उसी ओर अग्रसर होना चाहिए समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री नरेश कौशिक जी एम.एल.ए. हल्का बहादुरगढ़ ने आश्रम के द्वारा चल रहे सेवा कार्यो की भुरी-भुरी प्रशंसा की और आश्रम से सदैव जुड़े रहते हुए सहयोग करता रहूँगा।

इस अवसर पर श्री यशपाल जी गांधी, श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी, श्री स्वामी केशवानन्द

वानप्रस्थी जगत मुनि जी आदि बहादुरगढ़ एवं भिन्न-भिन्न स्थानों से पधार कर समारोह की शोभा बढ़ाई। योगा आचार्य श्री अभिमन्यु जी कोच यजवीर जी बच्चों के संरक्षक की देख-रेख आश्रम के विद्यार्थियों द्वारा कुश्ती के दांव-पेच-कठिन आसनों का प्रदर्शन भिन्न-भिन्न स्तूपोओं का प्रदर्शन किया गया। जिसको सभी उपस्थित माता व बंधुओं ने सराहा अंत में स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि ये कार्यक्रम निर्विधण सम्पन्न। आप सभी के सहयोग से हो गया है। अकेला चना क्या भाड़-फोड़ेगा। सभी के लिए मंगल कामना एवं आशीर्वाद देते हुए ग्रीष्म कालीन ऋतु में गुरुवार 27 जून से रविवार 30 जून 2019 तक स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती रोजड़ की अध्यक्षता में होने वाले शिविर में पधारने के लिए सभी को आमंत्रित किया गया। समापन समारोह पर मधुर स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पंवार अमेरिका वाले के सहयोग से की गई। इस अवसर पर अनेकों सहयोगियों को स्मृति चिन्ह साहित्य व गायत्री पटिका देकर सम्मानित किया गया। शिविर उद्घाटन से समापन समारोह तक श्री राजवीर जी आर्य द्वारा मंच संचालन कुशलता पूर्वक किया गया। श्री विक्रम देव जी शास्त्री ब्रहा. कर्ण आर्य, श्री जगमेन्द्र आर्य आश्रम के विद्यार्थियों द्वारा सातों दिन सुन्दर भोजन निवास आदि की सुचारू रूप से व्यवस्था की गई। भोजन उपरांत सभी प्रसन्नचित साधक साधिकाएं व श्रोतागण अपने-अपने गणत्वय को प्रस्थान कर गए।

# शहीदी दिवस को मनाया संकल्प दिवस

संकल्प सभा के आयोजक श्री अमनदीप भारद्वाज द्वारा आत्मशुद्धि आश्रम परिसर में स्वामी धर्ममुनि जी की अध्यक्षता में सकंल्प दिवस के रूप में मनाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हल्का विधायक श्री नरेश कौशिक व विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला परिषद के चेयरमैन श्री परमजीत सोलधा व श्री युद्धवीर भारद्वाज रहे। 23 मार्च को तीन नवयुवकों को फांसी के फंदे पर लटका दिया था जिससे सर्वत्र क्रान्ति की लहर दोड़ पड़ी थी पर जिससे अंग्रेज सरकार घबरा उठी थी। मुख्य अतिथि ने कहा कि हमें अपने शहीदों द्वारा प्रदान आजादी को दृढ़ संकल्प व देश भक्ति की भावना से कायम रखना चाहिए। श्री सुरेन्द्र दहिया, चिराग प्रथी, पं. अमित मिश्रा, ललित नारायण, दीपक कद्यान (निरोगकुँज) रामदेव आर्य आत्मशुद्धि आश्रम, आचार्य चाँद सिंह आर्य ने अपने विचारों द्वारा भगत सिंह के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी उपस्थित वक्ताओं व श्रोताओं का धन्यवाद किया और अपने जीवन को शहीदों जैसा बनाने का संकल्प लेने का आह्वान किया। श्री राजवीर आर्य ने मंच का संचालन किया। श्री विक्रम देव शास्त्री द्वारा समारोह की उत्तम व्यवस्था की गई थी। आत्मशुद्धि के विद्यार्थियों ने भी देश भक्ति का भजन प्रस्तुत करके खुब तालियां बटोरी।

# आश्रम के बाल पहलवान छाऐ मुण्डका दंगल में

दुल्हेंडी के अवसर पर आयोजित कुश्ती दंगल में आश्रम में निःशुल्क पढ़ रहें बाल पहलवानों ने 17 कुशितियाँ जीत कर आश्रम का नाम रोशन किया। रोबट पहलवान, हमपाई, जोनाराम, चुश्मई, मइतोई, रीनाल व अर्जुन ने कुल मिलाकर 17 कुशितियाँ जीती। आश्रम में आने पर बाल पहलवानों को स्वामी धर्ममुनि जी ने आशीर्वाद दिया। कोच-योगाचार्य अभिमन्यु, श्री चाँद सिंह आर्य व संरक्षक यज्ञवीर जी ने भी बाल पहलवानों को प्रोत्साहित किया। ध्यान रहे कि आत्म शुद्धि आश्रम में 48 बच्चे बिना कोई खर्च लिये उनका समुचित प्रबन्ध करता है। विद्यार्थी नागालैंड, आसाम, बिहार, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा प्रांतों के रहने वाले है।

-विक्रम शास्त्री

वेद सन्देश

# अपराधों से बचें

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**देवान् वा यच्चकृमा कच्चिदागः,**
**सखायं वा सदमिज्जास्पतिं वा॥**
**इयं धीर्भया अवयानमेषां,**
**द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात्॥**

ऋग 1.185.8

ऋषि:**अगस्त्यः**। देवते **द्यावापृथिव्यौ**। छन्दः **त्रिष्टुप्।**

**(सदम् इत्)** सदा ही **(देवान् वा)** या देवजनों के प्रति **(सखायं वा)** या मित्र के प्रति **(जास्पति वा)** या जाया-पति के प्रति **(कच्चित्)** कोई **(आगः)** अपराध **(चकृम्)** **(हमने)** किया है और करते हैं **(तो)** **(इयं)** यह **(धीः)** बुद्धि-भविष्य में अपराध न करने की भावना **(एषां)** इन **(अपराधों)** की **(अवयानं)** दूर करनेवाली **(भूयाः)** होवे। **(द्यावापृथिवी)** हे सूर्य और पृथिवी! **(तुम)** **(अभ्वात्)** महान् **(अपराध रूप संकट)** से **(नः)** हमें **(रक्षतम्)** बचाओ।

यद्यपि हम मानव प्रभु-सृष्टि के सर्वोत्कृष्ट प्राणी कहलाते हैं, तो भी हमारे अंदर अनेक दुर्बलताएँ हैं। हम सदा किसी न किसी के प्रति कुछ अपराध करते रहते हैं। कभी हम राष्ट्र के देवजनों अर्थात् विद्वान् पुरुषों और विदुषी नारियों के प्रति अपराध करते हैं, उनके अध्ययन-अध्यापन में विघ्न डालते हैं, उनके सार्वजनिक उपदेशों में अव्यवस्था उत्पन्न करते हैं, उन्हें अपमानित करते हैं या अन्य किसी प्रकार की हानि पहुँचाते हैं, कभी हम मित्र के प्रति अपराध करते हैं। उसके प्रति सौहार्द नहीं रखते, आवश्यकता के समय उसकी सहायता नहीं करते, उससे विश्वास-घात करते हैं, द्रोह करते हैं, उसके उपकार का बदला अपकार से देते हैं। कभी हम दम्पती के प्रति अपराध करते हैं। किसी एक पर असत्य दोषारोपण द्वारा पति-पत्नी के पारस्परिक स्वच्छ प्रेम में दरार उत्पन्न करते हैं, उनमें कलह के हेतु बनकर स्वयं आनन्द लेते हैं, उनकी अंतरंग बातों में हस्तक्षेप करते हैं, जहाँ उन्हें मार्ग-दर्शन चाहिए, वहाँ पथ-भ्रष्ट करते हैं। इसी प्रकार शासक, न्यायाधीश, गुरु, अन्तेवासी, माता, पिता व पुत्र, अतिथि, त्रेता, विक्रेता, ऋणदाता आदि के प्रति भी हम अपराध करते रहते हैं। जिसके प्रति हम अपराध करते हैं, उसकी तो इससे हानि होती ही है, साथ ही हम अपराधियों को भी इसका दुष्फल भोगना पड़ता है और हम एक सामाजिक संकट को उत्पन्न करने में कारण बनते हैं। आज से हम इन अपराधों को छोड़ने का व्रत लेते हैं, दृढ़ निश्चय करते हैं कि भविष्य में अपराध नहीं करेंगे और जो अपराध अतीत में कर चुके हैं उनके लिए संबद्ध व्यक्तियों से क्षमा-याचना करेंगे। हमारी यह 'धी', हमारा यह संकल्प और निश्य हमें अपराधों से मुक्त करने में सहायक हो। हे सूर्य और पृथिवी! जैसे तुम अपराध-मुक्त होकर ईश्वरीय नियमों के अनुसार अपने-अपने व्रत का पालन कर रहे हो, वैसा ही मैं भी करूं। हे सूर्य! तुम्हारे आदर्श पर चलकर मैं उज्ज्वल, निरपराध, निष्कलंक बनूँ। हे पृथिवी! तुमसे संदेश लेकर मैं सबसे यथायोग्य प्रीति का व्यवहार करूँ।

**-समाचार वेद मन्त्री**


## आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

| | |
|---|---|
| यज्ञ समुच्चय | मूल्य : 50 रु. |
| वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त | मूल्य : 25 रु. |
| स्वस्थ जीवन रहस्य | मूल्य : 20 रु. |
| फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट | मूल्य : 20 रु. |
| आत्मशुद्धि के सरल उपाय | मूल्य : 15 रु. |
| विद्यार्थियों के लाभ की बातें | मूल्य : 15 रु. |
| वृहद् जन्मदिवस पद्धति | मूल्य : 20 रु. |
| चाणक्य-दर्पण | मूल्य : 25 रु. |
| कल्याण-पथ | मूल्य : 20 रु. |
| प्राणायाम-विधि | मूल्य : 10 रु. |
| स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय | मूल्य : 15 रु. |

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

**प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला, झज्जर (हरियाणा)**
**पिन-124507, चलभाष :** 09416054195

सम्पादकीय

# क्या पाकिस्तान रूपी समस्या का कोई समाधान है?

किसी भी देश के लिए कोई समस्या पैदा होती है उसके पीछे दो प्रमुख कारण होते हैं। प्रथम तो राजनेताओं की सोच दूसरा विभिन्न प्रकार के मत-मतान्तरों अर्थात् मजहब को धर्म समझना व मानना। जो राजनेता चाहे वह किसी भी दल से सम्बन्ध रखता है अपने नैतिक मुल्यों से ज्यादा अपने व्यक्तिगत स्वार्थ, महत्वकांक्षा, यश व धन को महत्त्व देता है भले ही वह 10-20 वर्षों के लिए राज्य कर जाये लेकिन उसकी नितियों व स्वार्थ परायणता का दंश सैकड़ों वर्षो तक झेलना पड़ता है। राजा राममोहन राय ने एक धर्म सभा स्थापित की उनका यह समाघोष था कि सब धर्म समान है या तो स्थापित करने वाले कि भूल थी या उन लोगों की नासमझी जो धर्म और मजहब के अन्तर को नहीं मानते है। धर्म का आधार ईश्वरीय ज्ञान पर आधारित है और मजहबों का आधार भिन्न-भिन्न महापुरुषों के अपने-अपने विचारों का एक संग्रह मात्र है। कुछ व्यक्तियों ने मजहब को धर्म घोषित कर मजहम के सब दुर्गणों को धर्म के साथ जोड़ दिया है। इस प्रकार धर्म भी अधर्म हो गया और जो धर्म की स्थापना करना चाहते थे उनको घोर कष्टों, संघर्षो यहाँ तक अपने प्राणों को भी गंवाना पड़ा जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती इत्यादि। जब राजनीति में धर्म के स्थान पर मजहब घुस जाता है तो वह अपना रंग दिखाने लगता है और वह विचार धारा एक राष्ट्र मान कर उससे कल्पना रूपी राष्ट्र निर्माण के स्वप्न देख कर हमारे राजनेता आगे बढ़ते है। इस्लाम मजहब का उदय निर्माण के स्वप्न देख कर हमारे राजनेता आगे बढ़ते है। इस्लाम मजहब का उदय सातवीं शताब्दी में अरब देश में हुआ। अरब महाद्वीप उस समय बहुत पिछड़ा हुआ था और यहाँ पर यहुदी और ईसाई मजहब के लोग बसे हुये थे। इनके दो प्रमुख नगर थे एक मक्का और दुसरा मदीना। ये लाग आपस में कबीलों में बटे हुये थे और एक-दूसरे से संघर्ष करते रहते थे। इसी एक कुरेश कबीले में मोहम्मद नामक युवक ने इस्लाम मजहब की नींव रखी और अपने आपको खुदा का पैगम्बर घोषित किया और उनके अनुयायी कहलाने लगे। इसके साथ-साथ उन्होंने यह घोषणा भी कि जो मुसलमान नहीं होगा वह काफिर होगा। अरबों की अपेक्षा मोहम्मद साहब का जीवन उत्तम था। अरब लोग 20-20 शादियाँ करते थे। मोहम्मद साहब ने 11 शादियाँ की लेकिन अपने अनुयायियों के लिए चार विवाह करने की सीमा लगा दी। उस समय अरब देश में लड़कियों की संख्या ज्यादा होती थी। इसलिए बहुविवाह का यही कारण रहा होगा? अब सदा-सदा के लिए ऐसा हो जायेगा यह तो इस्लाम मत के संस्थापक ने भी नहीं सोचा होगा? आज के समय में यह कितना प्रासंगिक है आप सभी जानते है बस इसी तरह के भेद होते है मजहब और धर्म के अन्दर। सन 1919 तक हिन्दू और मुसलमान केवल एक राष्ट्र भारत की मांग अंग्रेजों से करते आ रहे थे। इसके पश्चात अलीगढ़ परम्परा अनुसार अंग्रेज राजनीतिज्ञ के सहयोग से मुसलमान अपना अलग राष्ट्र मान कर राजनीति करने लगे। मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इसके नेता मोहम्मद अली जिन्ना ने ब्रिटिश सरकार के सहयोग से अलग राष्ट्र स्थापित करने की व्यूह रचना कर डाली। इस कार्य के बहुत बड़े सहयोगी महात्मा गाँधी जी व पण्डित जवाहरलाल नेहरू रहे और इनके समर्थन के कारण इण्डियन नेशनल कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के आगे हथियार डाल दिये। ऑल इण्डिया मुस्लिम लीग के शीर्ष नेता का अलग राष्ट्र बनाने का मनोबल दिन-प्रतिदिन ऊँचा होता चला गया। यद्यपि उस समय के पंजाब के प्रधान मन्त्री सिकन्दर हयात और दीनबन्धु छोटूराम जैसे नेताओं से जिन्ना अलग राष्ट्र की बात करने से बहुत डरता था लेकिन फिर भी वह 1940 में हुये लाहौर अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित करने में सफल हो गया कि ''आल इण्डिया मुस्लिम लीग के इस अधिवेशन का यह सुविचारित मत है कि कोई भी

संवैधानिक योजना भारत में नहीं चल सकेगी और मुसलमानों को स्वीकार्य नहीं होगी जो कि निम्नलिखित बुनियादी सिद्धान्त पर आधारित ना हो। भौगोलिक दृष्टि से साथ लगे हुये इलाकों को इकट्ठा करके ऐसे क्षेत्र बनाये जाये जिनकी विभिन्न इकाईयाँ स्वशासित और प्रभुसतासम्पन्न हो'' जब इस प्रस्ताव का छोटूराम व अन्य उदारवादी मुस्लिम नेताओं को ज्ञात हुआ तो उन्होंने इसका घोर विरोध किया। दीनबन्धु छोटूराम से तो जिन्ना बहुत डरता था और स्पष्ट शब्दों में जिन्ना को चेतावनी दे दी गई कि अगर तू इस तरह से विष वमन करेगा तो तुझे पंजाब की भूमि पर पैर भी नहीं रखने दूंगा तू भाई से भाई को लड़ाता है। उनकी इस निर्भिकता को देख कर ही बाद में लौह पुरुष सरदार पटेल को कहना पड़ा ''यदि छोटूराम जिन्दा होते तो हमें पाकिस्तान रूपी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता।'' जिन्ना अपने कार्य में सफल हुआ और 15 अगस्त 1947 को देश आजाद होने के साथ-साथ पाकिस्तान का भी एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में गठन हो गया। जिसमें सिंध, बलूचिस्तान, उतर-पश्चिमी प्रान्त और पश्चिमी पंजाब तथा पूर्वी बंगाल को शेष भारत से काटकर पाकिस्तान नाम का एक नया देश बना दिया। उसी समय कश्मीर में भी युद्ध शुरु हो गया। माननीय श्री जवाहर लाल नेहरू जी ने एक तिहाई कश्मीर रखकर शेष कश्मीर पाकिस्तान को दे दिया। खराब यहीं से हुआ ना तो पाकिस्तान के नेता अपना देश सम्भाल पाये और न ही हमारे नेता समझ पाये। परिणामस्वरूप 1971 के युद्ध में बंगला देश अलग देश बना और कश्मीर रूपी कोढ़ हम आज तक भुगत रहे है। यह तो उसी समय यह सारा ही भाग दे देना चाहिए था क्योंकि आप बड़े उदार बन बैठे थे या उसी समय समस्त कश्मीर को अपने आधीन करके अपने राष्ट्र का एक हिस्सा बना लेना चाहिए था जो कि उस समय सेना के लिए कोई कठिन कार्य नहीं था। नेहरू और गांधी जी की उदारता ने हमारे देश के लिए गम्भीर समस्यायें खड़ी कर दी जिसका पुलवामा जैसी घटनाओं का परिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं, मैं वहीं आ रहा हूँ जहाँ से यह लेख शुरु किया था। इसका समाधान तो यही है कि हमारे देश के नेता मजहब नीति को छोड़कर धर्मनीति को अपानये तो पाकिस्तान या आतंकवाद हमारे लिए कोई बहुत बड़ी चुनौती नहीं है। हम निर्णायक कार्यवाही तभी कर सकते हैं जब इस समस्या के प्रति सारा राष्ट्र एक हो। हम एक दूसरे से प्रमाण मांगने की सोच को बन्द करे कम से कम देश के हितार्थ कुछ त्याग भावना समर्पण भाव और जो निर्दोष जवान व नागरिक मारे जा रहे हैं उनके प्रति ही हम संवेदना भाव रखें। डॉ. मोहम्मद इकबाल बहुत बड़े कवि हुये हैं। इनका मुस्लिम और हिन्दु समाज पर बड़ा प्रभाव था क्योंकि ये राष्ट्रवादी विचारधारा रखते थे।

**हिन्दी है हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा।**
**हब बुलबुले है इसकी यह गुलिस्तां हमारा।।**

लेकिन बाद में ये खिलाफत आन्दोलन से प्रभावित हो गये और कहने लगे

**''मुस्लिम है हम वतन है सारा जहाँ हमारा''**

यदि डॉ. इकबाल जैसे बुद्धिजीवी लोग भी अपनी सकारात्मक सोच रखते रहते तो भी इतनी गंभीर समस्याएं ना खड़ी होती। आज भी यदि दोनों तरफ निष्पक्ष भाव से बुद्धिजीवी वर्ग समान विचारधारा वाला बन जाये तो समस्या का अहिंसक समाधान भी सम्भव है। धारा 370 भी यदि समाप्त कर दी जाये तो आतंकवाद पर बहुत हद तक लगाम लग सकती है। वर्तमान में कश्मीर को विशेष दर्जा देने का कोई औचित्य नहीं है। आम जनता युद्ध नहीं चाहती है। चाहे वह पाकिस्तान की हो या हिन्दुस्तान की। अपनी सत्ता बनाये रखना या फिर अपनी सत्ता बनाना ही मुख्य उद्देश्य होता है। सदबुद्धि से कार्य बनेगा और इसी की प्रार्थना परमात्मा से करते है।

**-राजवीर आर्य**

आपसे अनुरोध है कि आप अपने अप्रकाशित प्रेरणादायक लेख तथा कविता टाईप की हुई सामग्री आप ईमेल **atamsudhi@gmail.com** पर भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। **-विक्रमदेव शास्त्री**

गतांक से आगे

# मुक्ति से पुनरावृत्ति

- महात्मा चैतन्यस्वामी

यदि उसे आग से बाहर निकाल दें तो वह पुन: लोहे का गोला ही हो जाता है क्योंकि वास्तव में वह लोहे का ही गोला था, अग्नि में तपकर वह आग जैसा हो गया था। यदि जीवात्मा का लय हो जाना माने तो जीवात्मा का अपना अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा जो कि असंभव है क्योंकि आत्मा स्वयं में नित्य, अविनाशी तथा एक अनादि पदार्थ है। ब्रह्म तो स्वभाव से आनन्दस्वरूप है, जबकि जीवात्मा निमित्त से आनन्दमय होता है। जो निमित्त से आनन्दमय है वह नित्य आनन्दस्वरूप की समता कैसे कर सकेगा? और कुछ नहीं तो कालभेद तो रहेगा ही। **'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति।'** अथवा **'यो वै तत्परं ब्रह्म वेद स ब्रह्मैव भवति।'** को लेकर यदि कोई हठ करे कि ब्रह्म को जानने वाला सचमुच ब्रह्म हो जाता है तो भी यहाँ 'भवति'-हो जाता है क्रिया से स्पष्ट है कि ब्रह्मवित् पहले ब्रह्म नहीं था, अब हुआ। उत्पन्न होने वाला भाव अनित्य एवं पराधीन होता है। निमित्त से बनने वाला सादि, सादि होने से अनिवार्यत: सान्त और सादि सान्त होने से अनित्य होगा। परन्तु असली ब्रह्म तो अनादि, नित्य तथा स्वभाव से आनन्दस्वरूप है। यह अन्तर बना रहेगा और इस अन्तर के कारण दोनों में एकात्म्य कभी नहीं होगा। ऋग्वेद में आया है-**कस्य नूनं कतमस्यामृतानाम मनामहे चारूं देवस्य नाम। को नो ब्रह्मा अदितये पुनर्दात्पिरतरं च दृशेयं मातरं च। अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारू देवस्य नाम। स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च॥** (ऋ 1-24-1, 2)

भावार्थ-प्रथम मन्त्र में प्रश्न का विषय है कौन ऐसा पदार्थ है जो सनातन अर्थात् अविनाशी पदार्थों से भी सनातन अविनाशी है कि जिसका अत्यन्त उत्कर्ष युक्त नाम का स्मरण करें वा जानें और कौन देव हम लोगों के लिए किस-किस हेतु से एक जन्म से दूसरे जन्म का सम्पादन करता और अमृत वा आनन्द के कराने वाली मुक्ति को प्राप्त कराकर भी फिर हम लोगों को माता-पिता से दूसरे जन्म में शरीर को धारण करता है। दूसरे मन्त्र में उतर दिया गया कि हे मनुष्यों! हम लोग जिस अनादि स्वरूप, सदा अमर रहने वा जो हम सब लोगों के किए हुए पाप और पुण्यों के अनुसार यथायोग्य सुख-दु:ख फल देने वाले जगदीश्वर देव को निश्चय करते और जिसकी न्याययुक्त व्यवस्था से पुन: जन्म को प्राप्त होते हैं। तुम लोग भी उसी को जानो किन्तु इससे अन्य दूसरा कोई उक्त कर्म करने वाला नहीं है। ऐसा निश्चय हम लोगों को है कि वही मोक्ष पदवी को पहुँचे हुए जीवों का भी महाकल्प के अन्त में फिर पाप-पुण्य की तुल्यता से पिता-माता और स्त्री आदि के बीच में मनुष्यजन्म धारण कराता है। देवयान से उत्क्रमण करती हुई मुक्ति को प्राप्त मुक्तात्मा मुक्ति की पूर्ण अवधि के बाद ही पुन: जन्म धारण करती है इस सम्बन्ध में ऋग्वेद और भी अधिक स्पष्ट शब्दों में कहता है-**परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते श्रृण्वते ते ब्रवीमि मा न: प्रजां रीरिषे मोत वीरान्** (ऋ.10-18-1) भावार्थ-विनाश करने वाला काल पुन: पुन: जन्म धारण करने वाले साधारण जनों को बार-बार मारता है परन्तु देवयान् मोक्षमार्ग पर जाने वाले मुमुक्षु-जनों को बार-बार या मध्य में नहीं मारता, अपितु उन्हें पूर्ण अवस्था प्रदान करता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थप्रकाश (नवाँ समुल्लास) में प्रश्न उठाते हैं-'जीव मुक्ति को प्राप्त होकर पुन: जन्म-मरण रूप दु:ख में कभी आते हैं, वा नहीं? क्योंकि-'**न च पुनरावर्त्तते न च पुनरावर्त्तत इति॥**' (छान्दो. उप. 8-15-1), '**अनावृत्तिः शब्दादनावृत्तिः शब्दात्॥**' (वेदान्त दर्शन 4-4-22), '**यद् गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम॥**'' (गीता 15-6) इत्यादि वचनों से विदित होता है कि मुक्ति वही है कि जिससे निवृत्त होकर पुन: संसार में कभी नहीं आता। इसके उत्तर में महर्षि जी ने ऋग्वेद (1-24-1,2) तथा सांख्य सूत्र को उद्धत करके सिद्ध किया है कि बन्ध और मुक्ति सदा नहीं रहती। फिर प्रश्न उठाया (न्याय दर्शन 1-1-22) कि 'जो दु:ख का अत्यन्त विच्छेद होता है, वही मुक्ति कहाती है... जो कि सदा बना रहता है।' इसका उत्तर देते हुए महर्षि कहते हैं-'यह आवश्यक नहीं कि 'अत्यन्त' शब्द अत्यन्तभाव ही का नाम होवे। जैसे '**अत्यन्तं दु:खमत्यन्तं सुखं वास्य वर्त्तेते**' बहुत दु:ख और बहुत

सुख इस मनुष्य को है। इससे यही विदित होता है कि इसको बहुत सुख वा दु:ख है। इसी प्रकार यहाँ भी 'अत्यन्त' शब्द का अर्थ जानना चाहिए।' यहाँ पर लग सकता है कि महर्षि जी ने उपरोक्त उपनिषद्, दर्शन और गीता के वाक्यों का कोई सार्थक उत्तर नहीं दिया है मगर इस सम्बन्ध में पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक जी अपने द्वारा सम्पादित सत्यार्थप्रकाश की टिप्पणी में लिखते हैं-'ग्रन्थकार ने यहाँ पूर्वोक्त तीनों प्रमाणों की विशिष्ट व्याख्या न करके वेदादि से विरोध दर्शाकर अपुनरावृति का अप्रामाण्य दर्शाया है। परन्तु ये सभी वचन अत्यन्त प्रामाणिक ग्रन्थों के हैं। इन्हें एक दम अप्रमाणिक कहना नहीं बन सकता। अत: उक्त वचनों का क्या-क्या अभिप्राय है, उसे हम स्पष्ट करते हैं-मीमांसा का एक न्याय है-**'नहि निन्दा निन्दितुं प्रवर्ततेऽपि तु विधेयं स्तोतुम्'** (द्र. 2-4-20 शाबरभाष्य)। तद्नुसार' **'अपश्वो वाऽन्ये गोअश्वेभ्य:'** इत्यादि वाक्तय का गो अश्व से भिन्न पशुओं के पशुत्वाभाव के प्रख्यापन में तात्पर्य नहीं है, अपितु अन्य पशुओं की अपेक्षा गो अश्व की प्रशंसा करना मात्र इष्ट है। इसी प्रकार **'न च पुनरावर्त्तते, न च पुनरावर्तते'** का तात्पर्य मुक्ति से पुनरावृत्ति के निषेध में नहीं है, अपितु मुक्ति के पूर्ण काल पर्यन्त जीव मुक्ति में रहता है, अर्थात् बीच में मुक्ति से नहीं लौटता। यही तात्पर्य उपनिषद् वेदान्तसूत्र तथा गीता के वचन का भी जानना चाहिए।

इसी मीमांसा के **'सर्वत्वमाधिकारिकम्'** (1-2-16) सूत्र के अनुसार दूसरे रूप में भी समझा जा सकता है। ब्राह्मण वचन है-**'पूर्णाहुत्या सर्वान लोकान् अवाप्नोति, सर्वान् लोकान् जयति।'** इस पर विचार करके **'सर्वत्वमाधिकारिकम्'** सूत्र से समाधान किया है कि पूर्णाहुति से प्राप्य जितना फल है, उतने का ही सर्वत्व यहाँ विवक्षित है। उपर्युक्त वचनों का मीमांसा के इस अधिकरण के अनुसार अर्थ इस प्रकार जानना चाहिए-'उक्त वचनों में जो पुनरावर्तन का निषेध किया है, वह आत्यन्तिक निषेध नहीं है, किन्तु प्रकृत मुक्ति विषय से सम्बद्ध है, अर्थात् मुक्ति का जितना काल शास्त्रों में कहा है, उस काल के मध्य मुक्त जीव का संसार में पुनरावर्तन नहीं होता।' स्वामी दर्शानानन्द जी ने इस मत की पुष्टि में छान्दोग्य उप. (08-15-1) का भाव इस प्रकार व्यक्त किया है कि ब्रह्मलोक अर्थात् मुक्ति की जो अवधि है, **(यावत् आयुष)** उस सयम तक जीव नहीं लौटता। वे ब्रह्मलोक अर्थात् मुक्ति की अवधि मानते हैं और **'न च पुनरावर्त्तते'** इस पद की संगति **'यावदायुषं'** से मिलाते हैं। उनके विपक्षी कहते हैं कि **'यावदायुषं'** का अर्थ है 'सदा'। स्वामी जी कहते हैं कि 'आयुषं' (जीवन) शब्द से अवधि का ही बोध होना चाहिए, 'सदा के लिए' 'आयु' शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता। आचार्य शंकर जी भी इसी बात की पुष्टि करते हैं-**'यावद् ब्रह्मलोकस्थिति: तावत्तत्रैव तिष्ठति, प्राक्ततो नावर्त्तत इत्यर्थ:।'** (छान्दो. उप. 8-15-1) अर्थात् जब तक ब्रह्मलोक में स्थिति है तब तक जीव वहीं रहता है, अवधि की समाप्ति से पूर्व नहीं लौटता। **'यदि हि नावर्त्तन्त एवमिह ग्रहणमनर्थकमेव स्यात्। तस्मादस्मात्कपादूर्ध्वमावृत्ति गम्यते।'** (बृह. उप. 6-2-15) अर्थात् यदि मुक्तात्मा का कभी न लौटना अभिप्रैत हो तो 'इह' पद का प्रयोग व्यर्थ हो जाए इसलिए इस कल्प के अनन्तर पुनरावृत्ति जानी जाती है। महर्षि व्यास जी के अनुसार-**'यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिकाणाम्।'** (वेदान्त 3-3-32) जब तक मोक्ष के अधिकारी जीवात्माओं का मुक्ति में रहने का अधिकार (समय) होता है, तब तक वे मोक्ष में रहते हैं। कपिल जी कहते हैं-**'इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेद:।'** अर्थात् जैसे इस समय सृष्टि चल रही है, वैसे ही सदा सृष्टि चलती रहती है, कभी भी सृष्टि सदा के लिए समाप्त नहीं होती है। कपिल जी के कहने का भाव है कि यदि जीव मुक्ति से लौटता ही नहीं, तो जब सारे जीव एक-एक करके मुक्त हो जाएँगे, तब सृष्टि बनेगी ही नहीं। जो कि कपिल जी नहीं मानते। इसका अर्थ यह हुआ कि जीव मुक्ति से लौटते हैं, तभी तो सदा सृष्टि चलती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस सम्बन्ध में सत्यार्थप्रकाश (नौवां समुल्लास) में लिखते हैं-'यह बात कभी नहीं हो सकती क्योंकि प्रथम तो जीव का सामर्थ्य शरीरादि पदार्थ और साधन परिमित हैं, पुन: उसका फल अनन्त कैसे हो सकता है? अनन्त आनन्द को भोगने का असीम सामर्थ्यकर्म और साधन जीवों में नहीं। इसलिए अनन्त सुख नहीं भोग सकते। जिनके

साधन नित्य हैं, उनका फल अनित्य कभी नहीं हो सकता और जो मुक्ति में से कोई भी लौटकर जीव इस संसार में न आवे, तो संसार का उच्छेद अर्थात् जीव नि:शेष हो जाने चाहिए। **प्रश्न**- जितने जीव मुक्त होते हैं, उतने ईश्वर नए उत्पन्न करके संसार में रख देता है। इसलिए नि:शेष नहीं होते। **उत्तर**-जो ऐसा होवे, तो जीव अनित्य हो जाए। क्योंकि जिसकी उत्पत्ति होती है, उसका नाश अवश्य होता है। फिर तुम्हारे मतानुसार मुक्ति पाकर भी विनष्ट हो जाए, (तो) मुक्ति अनित्य हो गई और मुक्ति के स्थान में बहुत सा भीड़-भड़क्का हो जाएगा। क्योंकि वहाँ आगम अधिक और व्यय कुछ भी नहीं होने से बढ़ती का पारावार न होगा।

और दु:ख के अनुभव के बिना सुख कुछ भी नहीं हो सकता। जैसे कटु न हो तो मधुर क्या, जो मधुर न हो तो कटु क्या कहावे? क्योंकि एक स्वाद के एक रस के विरूद्ध होने से दोनों की परीक्षा होती है। जैसे कोई मनुष्य मीठा-मधुर ही खाता-पीता जाए, उसको वैसा सुख नहीं होता, जैसा सब प्रकार के रसों के भोगनेवाले को होता है।' आगे और भी सार्थक व सटीक बात कहते हुए वे लिखते हैं-'और जो ईश्वर अन्तवाले कर्मो का अनन्त फल देवे, तो उसका न्याय नष्ट हो जाए। जो जितना भार उठा सके, उतना उस पर धरना बुद्धिमानों का काम है। जैसे एक मन भर उठाने वाले के शिर पर दश मन धरने से भार धरने वाले की निन्दा होती है, वैसे अल्पज्ञ अल्पसामर्थ्य वाले जीव पर अनन्त सुख का भार धरना ईश्वर के लिए ठीक नहीं।

और जो परमेश्वर नए जीव उत्पन्न करता है, तो जिस कारण से उत्पन्न होते हैं, वह चुक जाएगा। क्योंकि चाहे कितना ही बड़ा धनकोष हो, परन्तु जिसमें व्यय है और आय नहीं, उसका कभी न कभी दीवाला निकल ही जाता है। इसलिए यही अवस्था ठीक है कि मुक्ति में जाना, वहाँ से पुन: आना ही अच्छा है।

– महादेव सुन्दर नगर, हिमाचल प्रदेश


## धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

### ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

| | | |
|---|---|---|
| विशिष्ट | **35.00** | रु. प्रति किलो |
| उत्तम | **45.00** | रु. प्रति किलो |
| विशेष | **55.00** | रु. प्रति किलो |
| डीलक्स | **75.00** | रु. प्रति किलो |
| सर्वोत्तम | **130.00** | रु. प्रति किला |
| सुपर डीलक्स | **300.00** | रु. प्रति किलो |

**इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।**

निर्माता :

## मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

**856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006**

**फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872**

# ईश्वर की शरण ही सुखदायी है

- कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

उपनिषद्कार के अनुसार जो व्यक्ति यह कहता है मैंने जान लिया है कि ईश्वर पूर्णरूपेण, अवधिसहित क्या है, उसे कुछ भी नहीं पता चला कि ईश्वर क्या है क्योंकि ईश्वर अनन्त हैं? और जीवन सांत, ईश्वर असीम है और उसकी महिमा अपरम्पार है और जीवन ससीम है। ईश्वर का न वाणी से बखान हो सकता है, न कोई लेखनी से उसके विषय में लिखने में समर्थ हो सकता है। कोई शिल्पकार उसकी आकृति या प्रतिमा नहीं बना सकता। उस अनन्त गुण वाले परमेश्वर को शब्दावली की सीमा में कैसे बांधा जा सकता है। उपनिषद्कार इसको आगे कहता है कि मैंने अनेक वेद, शास्त्र, ग्रन्थ, साहित्य पढ़ डाले, मन्दिरों में जा-जा कर उसे खोजा। पहाड़ो, नदियों, पर्वतों, सागरों में उसे ढूंढा। प्रकृति के माध्यम से उसको जानने का प्रयत्न किया, परन्तु फिर भी उसके विषय में पूर्णरूपेण पता नहीं चला, तो मानों वह ईश्वर के विषय में थोड़ा जानने लग गया है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के कुछ गुणों का वर्णन किया है। ''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकर, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर;, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।'' केवल प्रभु के गुणों का वर्णन करने का नाम भक्ति नहीं है। अपनी असुविधाओं और प्रतिकूलताओं की निवृत्ति की याचना करना भी भक्ति नहीं है, अपितु अपनी बुराइयों, कुटिलताओं से बचने के लिए ज्ञानपूर्वक प्रयत्न और दूसरों के कष्ट दूर करने के लिए, सुख साधन जुटाने के लिए सदा पुरुषार्थ करते रहना ही भक्ति है। जब तक प्रार्थी प्रार्थना के साथ इच्छित वस्तु की प्राप्ति के लिए स्वयं यत्न नहीं करता, परमात्मा इस प्रकार की प्रार्थना को कभी नहीं सुनता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास के इस प्रकरण में बहुत उपयोगी और भ्रम निवारक विचार दिये हैं, जिसमें बताया गया कि ईश्वर स्तुति, प्रार्थना और उपासना से हमें क्या मिलता है:-''स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव को सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।'' जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा ही वर्तमान में अपना आचरण करना चाहिए। जब हम ईश्वर को न्यायकारी कहते हैं तो हमें भी न्यायकारी बनना होगा।

**कन्हैया लाल आर्य**

पक्षपात रहित होकर निर्णय करने होंगे। जब हम ईश्वर को दयालु कहेंगे, परन्तु अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर निर्दयी बन कर व्यवहार करेंगे, तो प्रभु आप की प्रार्थना कभी भी स्वीकार नहीं करेगा। ऐसी प्रार्थनाएं भी कभी न करें कि मेरे शत्रु का नाश कर दो। मुझे सबसे बड़ा बना दो। मेरी सबसे अधिक प्रतिष्ठा हो, ''मेरे सब अधीन हो जायें। ईश्वर! आप हमको रोटी खिलाइये, मकान में झाड़ू लगा दीजिये, वस्त्र धो दीजिए'' ऐसी प्रार्थना कभी सफल नहीं होती है क्यों प्रभु आप का मुंडू (सेवक) नहीं है, क्योंकि ईश्वर आज्ञा देता है कि पुरुषार्थपूर्वक प्रयत्न करो तभी तो यजुर्वेद में कहा है।

**''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:''**

हे मानव! वेदोक्त धर्मपूर्वक कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। इसी प्रकार परमेश्वर भी सबके उपकार करने की प्रार्थना में सहायक होता है, हानिकारक कर्म में नहीं। गुड़ गुड़ कहने से मुख मीठा नहीं होता, उसको गुड़ तथा उसका स्वाद कभी प्राप्त नहीं होता और जो यत्न करता है उसे शीघ्र या विलम्ब से गुण प्राप्त हो ही जाता है। राम राम, कृष्ण कृष्ण, ओ३म् ओ३म् कहने मात्र से ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती बल्कि राम, कृष्ण के गुणों को ग्रहण करने और दुरितों (बुराइयों) को दूर करने से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। भगवान् की शरण वास्तव में सुगन्धि देती है, मान बढ़ता है, यश कीर्ति भी बढ़ती है, पुष्टि मिलती है। जिसके जीवन में भक्ति आ गई तो समझना तो तुम ही नहीं तुम्हारे सारे परिवार में यश और कीर्ति आ गई है। कई पीढ़ियों तक यह संस्कार जाते हैं, परन्तु यहीं तक पहुंचकर तुम्हें थकना नहीं है।

कीर्ति, यश, समृद्धि आये तो इसे प्रभु का प्रसाद समझ कर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। जब ये सारी चीजें मिलने लगे तो भगवान् से कहना ''हे ईश्वर, संसार की माया मुझे नहीं चाहिए, मुझे आप की शरण चाहिए। भगवान् आप मुझसे कुछ भी ले लेना, लेकिन मेरी अपने प्रति श्रद्धा को कम मत करना। मेरी भक्ति को कम नहीं करना, मेरे विवेक को कम नहीं करना। मेरी लगन को कम नहीं करना।'' साधन सम्पन्न होने का यह अर्थ नहीं है कि भगवान् ने तुम्हारी मांग पूरी कर दी है। इसका तात्पर्य यह है कि आपने पूर्व जन्म में इतने अच्छे कार्य किये हैं कि आपको अपनी मनचाही वस्तु मिल गई है। प्राप्त की हुई भौतिकता को छोड़ने का नाम वैराग्य नहीं है बल्कि वैराग्य नाम है उन चीजों का त्यागभाव से भोग करते हुए प्रभु के ध्यान करते रहने का। अपने मन को यह विश्वास दिलाते रहना ये भोग तुम्हारा विनाश लायेगा। केवल भोग में मत फँसे रहना। प्रभु से साधन माँगना परन्तु पुरुषार्थ को मत छोड़ना प्रभु से वस्तु की जगह बुद्धि, ज्ञान, विवेक की मांग करना त्यागपूर्वक भोग करने का नाम वैराग्य है तभी तो वेद में कहा है-

**ईशावास्यमिदम् सर्वमयत्किञ्चित् जगत्यां जगत्।**
**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधाः, कस्य स्विद्धनम्॥**

(यजु. 40.2)

जब तक आप ब्रह्मचर्य काल में है, साधना कीजिए, तपस्या कीजिए, गुण सीखिये। जैसे ही गृहस्थ में जायें तो आपकी तपस्या प्रेम के रूप में, घर गृहस्थ के लिए उत्पन्न हो। वेदों में कहा है कि इन पति-पत्नी में इतना प्रेम दो जिस तरह एक चकवा और चकवी करते हैं। गृहस्थ आश्रम में यह उद्देश्य दिया जाता है कि इतना प्रेम होना चाहिए जैसे दूध और पानी मिलकर एक हो जाते हैं। जैसे ही गृहस्थ का काल पूरा हो जाये अर्थात् तीसरी पीढ़ी घर में आ जाये तो गृहस्थ से बाहर साधना में, तपसया में, समाजसेवा में अपने को लगा देना चाहिए। हमारी परम्परा में रिटायरमैंट को नहीं माना गया है। अवकाश प्राप्त कर बैठ जाना और मन में यह बात घर कर लेना कि बुढ़ापा आ गया है, उचित नहीं है।

स्वेट मार्डन ने कितना अच्छा लिखा है कि जिस दिन तुम्हारी हिम्मत तुम्हारा साथ छोड़ जाये, जिस दिन तुम्हें दूसरे के सहारे की आवश्यकता पड़ जाये, शरीर साथ न दे तो समझ लेना, बुढ़ापा आ गया है। और जब तक शरीर साथ निभा रहा है, आपका मन उत्साहित है, आप अपना काम स्वयं करना चाहते हैं, दूसरों से सहयोग की अपेक्षा नहीं रखते, सदैव सोचते हैं कि जब तक मेरे से बन सकेगा मैं दूसरों की सहायता करता रहूँगा। मुझे किसी के सहयोग और सहारे की आवश्यकता नहीं है तब तक आप अन्दर से प्रबल हैं, चाहे आपकी आयु कितनी ही क्यों न हो गई हो। यही मानना कि बुढ़ापा आप से बहुत दूर है, आप बूढ़े नहीं है। अन्तिम समय तक कर्म करते हुए जीवन जीना चाहिए। हाँ जीवन के इस भाग में मोह-ममता का परित्याग करना सीखो। त्याग नहीं करोगे तो रोना पड़ेगा। बुढ़ापे में जो लोग मोह-ममता में फंसे रहते हैं उन्हें रोना ही पड़ता है। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ती जाये घर की बजाय समाज के कार्यों के लिए प्राथमिकता प्रदान करें। समस्त संसार भर के लिए अपने जीवन को लगा दो। घर से बाहर निकल कर समाज सेवा के लिए लगायें तो रोग भी आपको नहीं पकड़ेंगे, शरीर भी स्वस्थ रहेगा।

आध्यात्मिक क्षेत्र के व्यक्ति को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि मनुष्य कर्म तो ईमानदारी से करे परन्तु फल की इच्छा को प्रभु के ऊपर छोड़ दे तभी भगवान् कृष्ण का वह उपदेश:-

**''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''**

सार्थक हो जायेगा। तब वह आनन्द स्वरूप प्रभु से हमें आनन्द की प्राप्ति हो सकेगी क्योंकि वह ही आनन्द का स्वामी है। क्योंकि वह प्रभु सत्, चित्, आनन्द है परन्तु हम तो केवल सतचित् हैं आनन्द उसी के पास है उसी से मिलेगा इसके लिए उसकी शरण में जाना होगा। उससे मिलने के लिए कहीं और भटकने की आवश्यकता नहीं है उसके दर्शन हृदय रूपी अन्तरिक्ष में होते हैं। मेल वहाँ होता है जहाँ मिलने वाले और जिससे मिलना है, दोनों विद्यमान हों, ऐसा एकमात्र स्थान हृदय ही है जहाँ जीवात्मा और परमात्मा दोनों हैं। मूर्ति का दर्शन माध्यम नहीं बन सकता क्योंकि उसमें सर्वव्यापकता के कारण प्रभु तो है परन्तु चेतनता नहीं है। चेतनता के बिना तो केवल वह प्रकृति के समान सत् है और परमपिता परमात्मा सत्, चित् और आनन्द है अत: मूर्ति के माध्यम से भटकाव तो हो सकता है, मार्ग नहीं मिल सकता। आइये अभ्यास और वैराग्य से मन के पवित्र होने पर पुरुषार्थ की कुंजी लेकर, कम्र करने की सतत इच्छा को प्राप्त कर उसकी शरण में जायें तो मन मन्दिर में उसके दर्शन अवश्य हो जायेंगे।

गतांक से आगे

# वेद द्वारा जीने की कला

– ओम प्रकाश आर्य

वेद और मानव जीवन का गहरा सम्बन्ध है। वेद जीवन जीने की कला सिखाता है। यह कला सबसे बड़े कलाकार ने बताई है। क्या बताई है? इसे जानने के पहले हमें इन तीन शब्दों पर विचार करना पड़ेगा-वेद, जीवन और कला। वेद क्या है? जीवन क्या है? कला क्या है? **'वेद'** शब्द **'विद्'** धातु से बना है, जिसका अर्थ है-ज्ञान। 'जीवन' शब्द 'जीव' धातु से बना है। जिसका अर्थ है-प्राण धारण करना। **'कला'** शब्द **'कल'** धातु, से बना है जिसका अर्थ है-आस्वादन। इन तीनों शब्दों का समन्वय बिठाने पर अर्थ होगा-प्राण धारण करने वाले के द्वारा ज्ञानपूर्वक आस्वादन करना।

प्राण धारण करने वाला है जीव। जीव ज्ञानपूर्वक जीवन का आस्वादन करे। यह ज्ञान कहाँ से मिलेगा? वेद से। वेद का ज्ञान किसने दिया है? परमात्मा ने। किसको दिया है? प्राण धारण करने वाले मनुष्य को। प्राण तो सभी जीव-जन्तु धारण करते हैं किंतु संकेत मानव के लिए क्यों? क्योंकि कला का सम्बन्ध मनुष्य से ही हो सकता है अन्य प्राणियों से नहीं। वे केवल भोग भोगते हैं, विचारशक्ति उनके पास नहीं होती। विचारने का काम केवल मनुष्य कर सकता है। इसलिए विचार करके काम करने वाले को मनुष्य कहा गया है। वेद परमात्मा का ज्ञान है। प्राण धारण करने का नाम जीवन है। जीवन का आस्वादन करने का नाम कला है। जीवन का आस्वादन हम कैसे करें। यही कला हमें वेदों से सीखनी है। जो इस कला में दक्ष हो गया, मानो उसका बेड़ा पार हो गया। जो इस कला को नहीं जाना, वह भवसागर में डूबता-उतरता रहेगा, कष्ट भोगता रहेगा। नाना प्रकार के दु:खजाल में फँसता रहेगा। जन्म-मृत्यु के बन्धन में पड़ता रहेगा।

**वेद क्या है?** वेद ईश्वर का अमर ज्ञान है। इसमें ज्ञान, विज्ञान, कर्म, उपासना से सम्बन्धित परमात्मा का उपदेश है। यह ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता। सृष्टि का प्रलय होने पर भी यह परमात्मा में बीजरूप में विद्यमान रहता है। अगली सृष्टि में वह पुनः मानव कल्याण के लिए अपने प्यारे मानव को प्रदान कर देता है। यह ज्ञान प्रत्येक कल्प में चार ऋषियों की आत्मा में प्रकाशित करता है। इसी कारण इसे अपौरुषेय कहा गया है। यह वैदिक संस्कृत में है। वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत का जन्म हुआ। लौकिक संस्कृत से विश्व की सभी भाषाओं का उद्भव हुआ। वेद में निहित ज्ञान से ही विश्व का कल्याण हो सकता है, अन्य कोई रास्ता नहीं है क्योंकि परमात्मा मानव का कल्याण करना चाहता है। वेद में परा, अपरा विद्या, ईश्वर-जीव-प्रकृति का ज्ञान, ज्ञान-कर्म उपासना, तृण से ब्रह्माण्ड का ज्ञान, जन्म से मृत्यु का ज्ञान, शांति-आनंद परमानन्द सुख की प्राप्ति का उपाय, लौकिक-अलौकिक सारा ज्ञान बीजरूप में निहित है। इसके शब्द यौगिक हैं, किसी न किसी धातु से निष्पन्न हैं और शब्द धवन्यात्मक हैं। यह गुण किसी भाषा में नहीं है। साररूप में वेद ज्ञान का आकार है।

**जीवन क्या है?** जीवन प्राण धारण करने का नाम है। प्राणों को कौन धारण करता है? आत्मा, आत्मा और प्राणों का अटूट सम्बन्ध है। जब तक आत्मा है तब तक प्राण हैं। शरीर से आत्मा के निकलते ही प्राण भी शरीर को छोड़ देते हैं। प्राणों को आत्मा कैसे धारण करता है? शरीर के माध्यम से। शरीर के माध्यम से कैसे? ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों, मन बुद्धि के द्वारा रग-रग में प्राणों के प्रवाह द्वारा। इस प्रकार जीवन का सम्बन्ध हुआ आत्मा से। यह प्रत्येक


## साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर– दिल्ली से बाहर"। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

**–व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195**

प्राणधारी के ऊपर लागू होगा। इसका प्रवाह जन्म-मृत्यु के रूप में सृष्टि-पर्यन्त चलता रहेगा अथवा मोक्ष प्राप्त कर लेने पर इस प्रवाह से मुक्त हो जाएगा। अतएव जीवन आत्मा के आविर्भाव का नाम है। इसका सम्बन्ध पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेन्द्रियों, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और स्थूल शरीर से है। स्थूल शरीर में आकर आत्मा अपने अस्तित्व को प्रकट करता है। इस प्रकार जीवन उस समुदाय का केन्द्रीकरण है जिसमें स्थूल शरीर को ढोता हुआ आत्मा निरंतर गति कर रहा है।

**कला क्या है?** 'कल' धातु का अर्थ 'आस्वादन' होने से कला उसे कहते हैं जिसमें आत्मा के सारे साधन आस्वाद लेते हुए भी साधनों को विकृत होने से बचाना है। साधन विकृत न हों, इस ढंग से हमें उनसे आस्वाद लेना है। यही वेद सीख देता है, जो उस सीख को समझ लिया, उतार लिया, वह इस कला में माहिर हो गया। हमें वेद से इसी कला को सीखना है। वह हमें जीने की कला सिखाता है। यदि यह ज्ञानपूर्वक शरीर व उसके साधनों द्वारा आस्वादन करेंगे तो जीवन का आनंद प्राप्त होगा। यदि हमें ज्ञान नहीं रहेगा तो सीधा-सा अर्थ है, दु:ख भोगना पड़ेगा। दु:खों से बचने के लिए वेद की शिक्षा माननी पड़ेगी। संक्षेपत:-करें ज्ञानपर्वूक, सुनें ज्ञानपूर्वक, देखें ज्ञानपूर्वक, बोलें ज्ञानपूर्वक, खाएँ ज्ञानपर्वूक, उठें-बैठें ज्ञानपूर्वक, सोचें ज्ञानपूर्वक, आचार-व्यवहार हो ज्ञानपूर्वक। यही कला है।

**वेद, जीवन, कला का उद्देश्य व समन्वय**-वेद का उद्देश्य है ज्ञान प्रदान करना, जीवन का उद्देश्य है ज्ञान प्राप्त करना और कला का उद्देश्य है सफलता प्राप्त करना। इन तीनों का समन्वय होने पर ही मानव को सुख, शांति और आनन्द की प्राप्ति हो सकती है। अन्यथा दु:खों का पहाड़ टूटते देर न लगेगी। चूँकि जीवन एक अनमोल रत्न है, इसलिए इस रत्न के उपयोग की कला जाननी चाहिए। हम किस ढंग से रहें, किस ढंग से जिएँ, किस ढंग से समय व्यतीत करें, इन तीनों का समन्त्रय कैसे करें- यह विचारणीय प्रश्न है। इसी कला को बताना प्रस्तुत लेख का मुख्य उद्देश्य है। इन तीनों का समन्वय ज्ञान, कर्म और उपासना द्वारा किया जा सकता है। ज्ञान वेद से प्राप्त करें। उसके अनुसार कर्म करें। उसे उपासना के रंग में रंग दिया जाए। इनका समन्वय हो जाएगा।

**वेद के अनुसार जीवन कैसे जिएँ**-वेद मनुष्य मात्र को जीने की कला सिखाता है। पूरी दिनचर्या के लिए एक प्रबन्ध प्रदान करता है। जैसे-प्रात:कालीन ब्रह्ममुहूर्त में उठने पर वेद-मंत्र-पाठ के साथ शय्या का त्याग करना। स्नानमंत्र, भोजनमंत्र, रात्रिकालीन शयन मंत्र, सन्ध्योपासना, यज्ञ करना, योगाभ्यास करना आदि। ये समस्त चर्याएँ जीवन को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाती हैं। यदि हम उन मंत्रों के भावों को जीवन में धारण कर लेंगे तो सुख और आनन्द की वृष्टि होने लगेगी। सारी कल्मषताएँ दूर हो जाएँगी।

**वैदिक जीवन जीने की कला है- सात्विकता-** जीवन जितना ही सात्विक होगा, आत्मा को उतना ही आनन्द प्राप्त होगा। मन में उतनी ही शांति आएगी। सात्विकता सात्विक खानपान से, सात्विक विचार से, सादा रहन-सहन से, सात्विक सोच से, सात्विक आचरण से आती है। सात्विकता से जीवन की दिशा बदल जाती है। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, वैमनस्य, शत्रुता, क्रोध आदि से दूर रहकर जीवन जीना चाहिए। वैदिक जीवन जीने की कला है-योगमार्ग पर चलना। योगमार्ग पर चलने वाला व्यक्ति आधि-व्याधि से ग्रसित नहीं होता। जिस प्रकार परिश्रमी व्यक्ति के घर में दरिद्रता नहीं आती, उसी प्रकार योगाभ्यासी व्यक्ति के जीवन में शारीरिक मानसिक रोग नहीं आते। सारी कल्मषताएँ स्वयं तिरोहित हो जाती हैं। इन्द्रियाँ पवित्र और सृक्त बन जाती हैं। जीवन ऊर्ध्वगामी हो जाता है। जीवन अनुशासित हो जाता है।

**वैदिक जीवन जीने की कला है**-सत्संग और स्वाध्याय-सत्संग और स्वाध्याय के द्वारा आत्मबोध


## आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

| बैंक | नाम व खाता संख्या | बैंक कोड संख्या |
|---|---|---|
| इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर | आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471 | IFSC-ALLA0211948 |

होता है। आत्मबोध होते ही मनुष्य का जीवन सुमार्ग पर चलने लगता है। सत्संग से तात्पर्य है वैदिक लोगों का संग। वैदिक सत्संग अन्त:करण का मैल धोता है। वैदिक साहित्य का स्वाध्याय अमृतरस प्रदान करता है। अपने आप का अध्ययन करना अपने को अध्ययन से जोड़ना है। यह बहुत बड़ी कला है।

**वैदिक जीवन जीने की कला है-** समय का सदुपयोग-हम अपने जीवन में समय-प्रबन्धन को महत्त्व दें। बिना समय का उचित बँटवारा किए हम कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकते। बिना महत्त्वपूर्ण कार्य किए जीवन सफल नहीं होता। बिना सफलता के मन अशांत बना रहता है। अशांत मन वाला व्यक्ति तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। तनाव बहुत बड़ा दु:ख है। इससे बचें।

**वैदिक जीवन जीने की कला है**-यज्ञ, संध्या, संस्कार, चिन्तन- मनन- यज्ञ के द्वारा जीवन का विस्तार होता है। यह एक अनिवार्य कर्म है। संध्या के द्वारा आत्मा को परमात्मा की निकटता का आभास होता है। सोलह संस्कार हैं। इनके द्वारा मनुष्य का निर्माण होता है। श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करना बहुत बड़ी कला है। इसके द्वारा जैसी सन्तान चाहें वैसी प्राप्त कर सकते हैं। अपने जीवन के बारे में चिन्तन-मनन करना-परमात्मा का चिन्तन करना, उसके गुणों का चिन्तन-मनन करना-इससे जीवन में पवित्रता आती है। सात्विक गुणों की वृद्धि होती है। सात्विक जीवन मोक्षमार्ग की ओर ले जाता है।

**वैदिक जीवन जीने की कला है-** सेवा, परोपकार, धर्म को अपनाना- इन गुणों को धारण करके जीवन को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। सेवा के द्वारा अहंकार नष्ट हो जाता है। परोपकार के द्वारा आत्मा को परम आनन्द की प्राप्ति होती है। धर्म के सच्चे अर्थ को अपनाने से जीवन सफल हो जाता है।

**वैदिक जीवन जीने की कला है-** आश्रमव्यवस्था- हर आश्रम का पृथक्-पृथक् कर्म निर्धारित किया गया है। विद्यार्जन, धनार्जन, ज्ञानार्जन और उपकार। इनकी व्यवस्था से समाज निखरता है। इनके द्वारा सारे सुख प्राप्त हो जाते हैं। यह एक मर्यादित व्यवस्था है। बिना मर्यादा के जीवन उच्छृंखल हो जाता है। मर्यादा में रहना बहुत बड़ी कला है। **''कुर्वन्नेवेह कर्माणि'', ''व्यं स्याम पतयो रयीणाम'', ''भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम'', मनुर्भव'', ''मधुमन्मे परायणम्''** आदि उपदेश, सप्तमर्यादाएँ, यौगिक जीवन, शारीरिक-मानसिक आध्यात्मिक ज्ञान जीवन के सारे सुख और आनन्द प्राप्त कराने वाले हैं। ये उत्तम विचार ही जीने की सच्ची कला है। जिनका जीवन इनके अनुसार चलता है, उनका जीवन सार्थक हो जाता है। आज मनुष्य तनाव में जी रहा है। इस मार्ग पर चलने से तनाव स्वत: दूर हो जाएँगे। अज्ञानता के कारण मनुष्य नाना प्रकार के कष्ट भोगता है। जीवन जीने की कला के लिए वैदिक पथ पर चलना पड़ेगा। वेदों की ओर लौटना पड़ेगा।

इस प्रकार मनुष्य ज्यों-ज्यों वेदमार्ग पर चलता जाता है त्यों-त्यों वह सच्चे अर्थों में जीवन को सार्थक बनाता जाता है। वास्तव में वैदिक जीवन की हर बात एक कला है। छोटी बात भी बड़े महत्त्व की है। आज इस कला की महत्ती आवश्यकता है। मनुष्य भौतिकवाद में डूब-उतरा है। इसे धारण करके शांति और आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

आर्य समाज रावतभाटा
वाया कोटा (राजस्थान) 323307

# मासिक सत्संग सम्पन्न

श्री विश्वनाथ जी आर्य अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़ परिवार द्वारा मासिक सत्संग रविवार 31 मार्च सायं 4 से 6 बजे तक आयोजन किया गया। यजमान आसन पर श्री प्रवीन मित्तल धर्मपत्नी कविता मित्तल तथा ब्रह्मचारी कर्ण के द्वारा यज्ञ कार्य सम्पन्न हुआ। श्री विश्वनाथ जी ने भी आध्यात्मिक विचार रखे। श्री वानप्रस्थी विश्वमुनि जी द्वारा सुन्दर भजन सुनाया गया। आचार्य चांद सिंह जी द्वारा उपदेश तथा भजन प्रभावशाली रहे! श्री स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा आशीर्वाद के साथ सारगर्भित उपदेश दिया गया। प्रसाद वितरण के साथ शांति पाठ हुआ।

# असीमित अधिकार अराजकता को जन्म देते हैं

गतांक से आगे

- जगदीश वानप्रस्थ

पृथ्वी से लेकर सूर्य तक जितने भी ग्रह-नक्षत्र हैं सभी अपनी-अपनी सीमा में रहकर ही चक्कर काट रहे हैं। यदि ये मर्यादा छोड़कर स्वच्छन्द हो जायें तो प्रलय हो जाए। इसलिए अधिकारों का उपयोग भी समाज और राष्ट्र के हित में ही होना चाहिए। पशु पक्षियों की भाँति स्वच्छन्द विचरण करना मनुष्य का स्वभाव नहीं है। मनुष्य जन्म से ही परिवार, समाज और राष्ट्र के नियमों के बन्धन में बंधा है। बच्चा जब जन्म लेता है तब उसके हाथों की मुठ्ठियां बंध होती हैं। कई अधिकार तो उसे जन्म से ही मिल जाते हैं। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र हैं। पिछले जन्मों में किये हुए कर्मो के अनुसार ही अगला जन्म मिलता है। अच्छे कर्मो के फल स्वरूप अच्छा और बुरे कर्मो के फलस्वरूप नीच योनि और दु:खी परिवार में जन्म लेता है। बालक को अच्छे कर्मो के फलस्वरूप पहला अधिकार तो सभ्य, सुशील और विद्वान माता-पिता के घर जन्म लेता है। दूसरा अधिकार कुलीन धन-धान्य से सम्पन्न भरे पूरे परिवार का होना। तीसरा अधिकार अच्छे आचार्य शिक्षक और गुरु का होना। चौथा अधिकार अच्छा पास-पड़ौस, सामाजिक वातावरण, सभ्य समाज के रूप में मिलता है। ऐसे स्थान पर जन्म लेकर मनुष्य को मनुष्यपन का ज्ञान हो जाता है और अपने पुरुषार्थ से मोक्ष तक पहुँच जाता है। बुरे कर्मो के फलस्वरूप इसके विपरीत परिस्थितियाँ होती हैं। हमारे देश की प्राचीन राजधानी दिल्ली में जब तक स्वदेशी मूल के राजा, महाराजाओं का शासन रहा तब तक सम्पूर्ण भारत में शासन-प्रबन्ध धर्मशास्त्र के अनुसार किया जाता था। मनुस्मृति एक धर्मशास्त्र है जिसमें लोकधर्म और राजधर्म दोनों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। मनुस्मृति का मूल वेद हैं। थोड़े से प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़कर सम्पूर्ण मनुस्मृति वेदानुकूल है। राजा जब राजसभा में बैठता था तो सिंह-आसन पर बैठता था और जब न्याय सभा में बैठता था तो उस आसन को धर्मासन कहा जाता था। सामान्यता न्याय व्यवस्था न्यायाधीशों के अधीन थी। विशेष अवसरों पर ही राजा को न्याय करना पड़ता था। सन् 1206 ई. में जब से दिल्ली में विदेशीमूल के सुल्तानों, बादशाहों और लार्डो ने शासन करना शुरु किया तभी से शासन प्रबन्ध में पक्षपात शुरु हुआ। उनका शासन प्रबन्ध उनकी मजहबी किताबों के अनुसार चलता था। अपना स्वार्थ साधन के लिए उन्होंने कई नए नियम भी बनाये। उनके शासन में जनता को कोई अधिकतर नहीं था। पहले राजा-प्रजा का पिता-पुत्र की तरह सम्बन्ध था जो बाद में स्वामी-सेवक का हो गया था। हिन्दू समाज में बाल-विवाह पर्दाप्रथा, सति-प्रथा जैसी बुराई थी वे उसी युग की देन थी। लगभग 650 वर्षो के कालखंड में स्त्री जाति पर बहुत अत्याचार हुए। सन् 1857 के बाद देश में जनजागरण शुरु हुआ और समाज सुधार के कई कार्य हुए। विदेशी शासन का अन्त 15 अगस्त सन् 1947 को हुआ। देश विदेशी मूल के शासकों से मुक्त हुआ परन्तु देश का एक बहुत बड़ा भूभाग काट कर पाकिस्तान के रूप में अलग कर दिया। पाकिस्तान का निर्माण दो राष्ट्रों के सिद्धान्त पर हुआ था अर्थात् हिन्दूराष्ट्र और इस्लामी राष्ट्र/स्वतन्त्रता के बाद भारत में नये संविधान का निर्माण हुआ और 26 जनवरी 1950 से इसे लागू कर दिया। भारतीय संविधान 22 भागों में विभाजित है जिसमें 395 अनुच्छेद हैं। तीसरे भाग में मूल अधिकारों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है जो संक्षेप में इस प्रकार है-समता का अधिकार, स्वतन्त्रता का अधिकार, शोषण के विरूद्ध अधिकार, धर्म की स्वतन्त्रता का अधिकार, संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार, संविधानिक उपचारों का अधिकार इत्यादि।

संविधान के चौथे भाग में राज्य नीति के निदेशक तत्त्वों को शामिल किया गया है। यद्यपि इस भाग में अन्तर्विष्ट उपबंध किसी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय नहीं होगें फिर भी इनमें अधिकथित तत्व देश के शासन में मूलभूत है और विधि बनाने में इन तत्त्वों को लागू करना राज्य का कर्तव्य होगा। संक्षेप में यह तत्व इस

प्रकार है-लोककल्याण की अभिवृद्धि के लिए व्यवस्था बनाना, पर्यावरण का संरक्षण, राष्ट्रीय महत्व के स्थानों व वस्तुओं का संरक्षण, नागरिकों के लिए एक समान सिविल संहित इत्यादि।

संविधान के इसी भाग में 42वां संशोधन करके इसके अनुच्छेद 51 (क) के रूप में 'मूल कर्त्तव्य' भी जोड़ दिये गये जो संक्षेप में इस प्रकार है-संविधान का पालन करना, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करना, भारत की प्रभुता एकता और अखंण्डता की रक्षा करना, देश की रक्षा और राष्ट्र की सेवा करना, भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करना जो धर्म भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करना जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध हो, सामजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा की समझ, प्राकृति पर्यावरण संरक्षण की रक्षा, सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा और हिंसा से दूर रहना, इत्यादि। इनका पालन करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

हमारे संविधान में कानून बनाते समय राज्य नीति के निदेशक तत्त्वों की प्रेरणा और देश की एकता और अखंडता की रक्षा करने के लिए मूल कर्तव्यों की व्यवस्था होने पर भी देश में प्रतिदिन अलगाववाद, आतंकवाद और अराज़कता का वातावरण बनता जा रह है यह गंभीर समस्या है। इसका हल निकालना सरकार का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए। अपराधियों को कठोर दंड देने के लिए भारतीय दंड संहिता और दंड प्रक्रिया संहिता पहले से ही बनी है इनका पालन कठोरता से होना चाहिए।

अधिकारों का नाजायज लाभ उठाकर देश में जब देशव्यापी हड़ताल व आन्दोलन चलाए जाते है तब सरकारी और निजी सम्पत्ति का लाखों-करोड़ों रूपयों का नुकसान होता है जिसकी भरपाई करना असम्भव होता है फिर भी इन पर रोक नहीं लगाई जाती। विकास मित्र का होना चाहिए, शत्रु का तो विनाश ही होना चाहिए। अहिंसा ब्राह्मण का धर्म है क्षत्रिय का धर्म तो हिंसक जनों का वध करके अपनी जनता की रक्षा करना ही है। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का नाजायज लाभ उठाकर देश के प्रधानमन्त्री के बारे में अनाप-शनाप बातें व अभद्र भाषा का प्रयोग किया जाता है तो जनसामान्य की औकात कहाँ है जो गुंडों से अपने को सुरक्षित रख सके।

प्राचीन काल में राजपुरोहित और प्रधानमन्त्री के पद सम्मानीय माने जाते थे। आज के समय वह बात नहीं है।

– जगदीश वानप्रस्थ, संचालक ब्रह्मर्षि
विद्याधर्म प्रचार मंच, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

## आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

**धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195**

# बसंत ऋतु यज्ञ एवं योग साधना शिविर की सुन्दर झलकियां

# बसंत ऋतु यज्ञ एवं योग साधना शिविर की सुन्दर झलकियां

# संयुक्त परिवार में हो रहा विघटन, बिखराव

गतांक से आगे

पारिवारिक संबंधों के बिखरने या टूटने के कई कारण हो सकते हैं। मसलन, नई पीढ़ी बनाम पुरानी पीढ़ी। पुरानी पीढ़ी के लोग पुरानी रीति रिवाजों के साथ बंधें होते हैं तथा पुराने संस्कारों से जुड़े होते हैं जबकि नई पीढ़ी इन बातों को बहुत तवज्जों नहीं देती है और न ही उन्हें मानना चाहती है। परिणामस्वरूप दोनों पीढ़ी के लोगों में मतभेद उत्पन्न होता है यदि दोनों में से कोई भी पीछे न हटे तो रिश्तों में दरार आने लगती है।

आज के युवा वर्ग की अपनी इच्छाएं और आकांक्षाएं हैं। उनका मानना है कि घर के बड़े बुजुर्ग उनकी आकांक्षाओं को न तो समझते हैं और न तवज्जों देते हैं। इसके फलस्वरूप दोनों पीढ़ी के बीच एक ऐसी खाई उत्पन्न हो जाती है, जिसे पाटना आसान नहीं होता और संबंधों में बिखराव की स्थिति पैदा होने लगती है। युवा वर्ग निजी जिन्दगी में किसी की दखल अंदाजी पसंद नहीं करते। यही कारण है कि आज के युवाओं का रूझान एकल परिवार की ओर बढ़ता जा रहा है और संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है।

आपसी वैमनस्यता भी टूटते पारिवारिक संबंधों का प्रमुख कारण है। आज स्पर्धा के युग में परिवार के सभी सदस्यों में आगे बढ़ने की होड़ रहती है। फलस्वरूप परिवार के सदस्यों के बीच ईर्ष्या-द्वेष की भावना उत्पन्न होती है जो परिवार को विघटन के कगार पर ले जाती है। आज का युवा वर्ग भावानात्मक रूप से कमजोर होता जा रहा है। मां-बाप, भाई-बहन, बेटे-बेटियां यहां तक कि पति-पत्नी में भी दूरियां बढ़ रही हैं। ऐसा लगता है कि भावना रूपी रस्सी की डोर हर उम्र के लोगों में कमजोर पड़ती जा रही है। लोग फेसबुक पर तो दुनिया से जुड़ रहे हैं लेकिन अपने आस-पास स्थित करीबी लोगों से दूर होते जा रहे हैं।

आर्थिक स्वतन्त्रता भी पारिवारिक मिठास को कम करने का प्रमुख कारण है। आज स्त्रियां घर तक सीमित नहीं रह गई हैं। हर क्षेत्र में उनकी उपस्थिति दर्ज हो रही है। आर्थिक स्वालंबन के कारण वे किसी के सामने झुकना नहीं चाहती। ऐसा भी कह सकते हैं कि उन्हें किसी सूरज-ए-हाल किसी की सत्ता स्वीकार नहीं है। आज मनोरंजन के साधन और विकल्प इतने ज्यादा हो गए हैं कि लोगों की एक-दूसरे पर निर्भरता कम हो गई है। जो लोग एक-दूसरे के साथ उठने-बैठने में खुशी खोजा करते थे, वे आजकल टीवी, कम्प्यूटर वीडियो गेम आदि में खुशी ढूंढ रहे हैं। इसलिए मनुष्य के लिए मनुष्य की उपयोगिता कम और तकनीकी उपयोगिता बढ़ गई है। अब रिश्तेदार पास न हों तो चलेगा लेकिन आधा घंटे के लिए नेट कनेक्शन कट जाए तो मन व्याकुल हो जाता है। शायद इंसानों का मशीनीकरण हो रहा है।

पहले घर के बड़े बुजुर्ग परिवार को एक सूत्र में बांधने के लिए सेतु का काम करते थे। वे परिवार के सदस्यों को समझा-बुझाकर एक कर देते थे लेकिन आज घर में बुजुर्गो को उतना सम्मान नहीं मिल पाता है, जितना पहले था। रातों-रात सफलता के शिखर पर पहुंचने की लालसा, खून के रिश्तों में बिखराव, आपसी संवादहीनता खालीपन एवं रिश्तों में आई ठंडक सामाजिक और पारिवारिक विघटन के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इस समस्या से कैसे निजात पाई जाए। दरअसल, संबंध खरीदे नहीं जा सकते। संबंध तो केवल जिये जा सकते हैं, निभाए जा सकते हैं और सहेजे जा सकते हैं। हमारा समाज संबंधों का ताना-बाना है, जिस पर हम अपने आस-पास कई रिश्ते बुनते हैं। रिश्ता बनाना और निभाना कपड़े बुनने जैसी प्रक्रिया नहीं है। अगर कपड़ों में गांठ पड़ जाए तो बुनकर बड़ी सफाई से इसे छिपा देता है लेकिन अगर रिश्तों में गांठ पड़ जाए तो ताउम्र यह खुल नहीं पाती है। टूटते परिवार और दरकते रिश्ते की समस्या से निजात पाने के लिए हमें युवा वर्ग में संयुक्त परिवार की महत्ता एवं भाईचारे की भावना पैदा करनी होगी। संयुक्त परिवार से ही संयुक्त समाज का निर्माण संभव है।

अशिक्षा और स्वार्थ की सोच रखने वालों के मन में यह धारणा बन जाती है कि वे खुद कमाते हैं और

**( शेष पृष्ठ 30 पर )**

# अथर्ववेद में मानव रोग-चिकित्सा की औषधियाँ

-लेखिका मृदुला अग्रवाल

**''नेच्छत्रुः प्राशं जयति सहमानाभिभूरसि।**
**प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे॥''**

-अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-27, मन्त्र-1॥

**भावार्थ**-इस सूक्त में ''औषधि'' के उदाहरण से बुद्धि का ग्रहण है। ''औषधि'' का अर्थ निरूक्त 9-27 में किया है ''औषधिये ओषत्, दाह वा ताप को पी लेती है अथवा ताप में इनको पीते हैं, अथवा ये दोष को पी लेती है।'' मन्त्र का आशय जिस प्रकार शुद्ध परीक्षित औषधि के सेवन करने से ज्वर आदि रोग नाश होते हैं, ऐसे ही मनुष्य के बुद्धिपूर्वक, प्रमाण, युक्त विवाद करने से बाहिरी और भीतरी प्रतिपक्षी हार जाते हैं। बुद्धिमानों ने बुद्धि को ''महौषधि'' बताया है, जिसके ज्ञान के उचित प्रयोग से मनुष्य पूर्ण आयु भोगता है। बुद्धिमान पुरुष अपने विचलित मन को चिकित्सक की भांति स्वयं ही स्वयं को ठीक कर सकता है। **''अविद्या''** एक महारोग है। मनुष्य अपने मानसिक व वाचिक दोष से विद्यादेवी को क्रोधित न करे वरंच एक अद्वितीय परमात्मा की शरण लेकर श्रद्धापूर्वक अपनी न्यूनताएँ पूरी करें। परमेश्वर ने मनुष्य को बड़ी शक्ति दी है। सब प्राणियों में उसे ही सर्वश्रेष्ठ बनाया है। विद्या का रस सांसारिक मिष्ठान आदि रोचक पदार्थों से बहुत रसीला अर्थात् लाभदायक और उपकारी होता है। ऐ सत्य में उत्पन्न होने वाली तापनाशक शक्ति! तू ज्ञान का आस्वादन वा मिठास देकर मनुष्य को आत्मज्ञान से सम्पन्न कर और **''सत्य-धर्म''** प्रवृत्त करके मानसिक एवं शारीरिक रोगों से मुक्त करा दो। **''मनुर्वै'' यत्किञ्चावदत् तद भैषजम्''** अर्थात् मनु ने जो कुछ कहा है वह भेषज=औषध के समान गुणकारी एवं कल्याणकारी है। औषध के सम्बन्ध में मनुस्मृति, श्लोक-46 में लिखा है:-

**''उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्ड प्ररोहिणः।**
**ओषध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः॥''**

अर्थात् बीज और शाखाखण्ड से उत्पन्न होने वाले सब स्थावर जीव, एक स्थान पर टीके रहने वाले वृक्ष आदि **''उद्भिज्ज''** भूमि को फाड़कर उगने वाले कहाते हैं। इनमें फल आने पर पककर सूख जाने वाले और जिन पर बहुत फूल-फल आने पर पककर सूख जाने वाले और जिन पर बहुत फूल-फल लगते हैं वे **''औषधि''** कहलाते हैं। प्राण और अपान वायु का संचार ठीक न होने से रूधिर जम कर रोग उत्पन्न होता है:-

**''जंगिड़''** (संचार करने वाला औषध) उत्तम औषध विशेष शरीर में प्रविष्ट होकर रूधिर का संचार करके रोग को मिटाता है। रोग के कारण जो शब्द में, इन्द्रियों में, बुद्धि में विकार होता है अर्थात् विचलित करने वाली निर्बलताओं को ''जंगिड औषध'' का सेवन अच्छा करता है। मनुष्य जीवन की विघ्नों को जैसे, व्याधि, भारीपन, द्विविद्या, मूल, ढीलापन, जंजाल में फंस जाना, भ्रम व अज्ञान से कुछ का कुछ देखना, ठिकानें का न पाना, अदृढ़ता, चित्त की हलचलें आदि को ''जंगिड़-औषध'' दबाता है। पीड़ाओं को (विशेषकर नीचे के जोड़ो की) एवं रोग-जन्तुओं का नाश करता है। विकन्ध (विशेष सुखाने वाले वात रोग) को और संस्कन्ध (सब शरीर में व्यापने वाले महावात रोग) को जंगिड-औषध दबाता है। प्लुरिसी (Pleurisy) और उसके ज्वर को ठीक करता है। आशरीक (शरीर कुचल जाने वाले रोग) को, विशरीक (शरीर तोड़ डालने वाले रोग) को, बलास (बल गिराने वाले सन्निपात आदि कफ रोग) को, पसली वा छाती की पीड़ा को, सारे शरीर में चकत्ते करने वाले, जीवन को कष्ट देने वाले ज्वर को, कठोर हृदयवालों को, भयानक नेत्र वाले को, कुकर्म और कुपथ्य से उत्पन्न होने वाले रोगों को **''जंगिड़''** का सेवन रोग निवृत्ति करता है एवं सारे रोग निष्प्रभाव हो जाते हैं। इसीलिए तत्त्वदर्शी वैद्यों ने वा ऋषियों ने परमेश्वर की सृष्टि में खोज लगाते-लगाते **''जंगिड-औषध''** बड़ा अद्भुत माना है। सायणाचार्य ने **''जंगिड''** वृक्ष विशेष वाराणसी में प्रसिद्ध बताया है। ''अपामार्ग'' औषधि का अर्थ ''सर्वथा संशोधक'' है। कुछ विद्वानों ने (auchyranthes as pera) की है। यह औषधि कफ, बवासीर, उदर रोग और विष रोग का नाश करती है। यह औषधि

चिरकालिक रोगों को, महामारी रोगों के कीटाणुओं को, शरीर और आत्म की दुर्बलताओं को, नींद में बेचैनी को, इन्द्रियों की घर को शोधन करती है। जैसे सूर्य अन्धकार को मिटाता है-प्रकाश देता है-वैसे ही **''अपामार्ग-औषधि''** भी रानी की तरह काम करती है। सद्वैद्य की बतलाई हुई यह औषधि बड़ी गुणकारी होती है। **''अपामार्ग-औषध''** सब पौधों का सम्राट के नाम से प्रसिद्ध है।

**''अश्वत्थ''** पीपल का वृक्ष, दूसरे वृक्षों के खोखले, घरों की भीतों और अन्य स्थानों में उगता है और बहुत गुणकारी है। खेर के वृक्ष पर उगने से अधिक गुणदायक हो जाता है। लोग बड़े आदर से पवित्र पीपल की चित्तप्रसादक छाया और वायु में सन्ध्या, हवन, व्यायाम आदि करते हैं और इसके दूध, पत्ते, फल, लकड़ी से बहुत सी औषधियां बनाते हैं। शब्दकल्पद्रुम कोष में इसको मधुर, कसैला, शीतल, कफ, पित्त-विनाशी, रक्तदाह शान्तिकारक आदि और ''खदिर'' अर्थात् ''खैर'' को शीतल, तीखा, कसैला, दाँतों का हितकारी, कृमि, प्रमेह, ज्वर, फोड़े, कुण्ड, शोथ, आम, पित्त, रूधिर पांडु और कफ विनाशक आदि लिखा है। सद्वैद्य पीपल के प्रयोग से रोगों का नाश करके प्रजा में शान्ति रखता है।

**''पाठा''** लता विशेष है जिससे तिक्तता, उष्णता, वात-पित्त, ज्वर-पित्त दाह, अतिसार, शूल नाशन आदि क्रियाएँ होती हैं।

**''शतवार''** औषध जिसके नाम ''शतावरी'' और **''शतमूली''** भी है।

जो रोग शरीर की मलिनता से, पृथिवी और आकाश में जल, वायु की मलीनता से और जो एक दूसरे के लगाव से संक्रामक रोग उत्पन्न होते हैं, वैद्य लोग उनको ''शतवार औषध'' से नाश करते हैं। जब 'दाद' बवासीर के कारण होते हैं तो शतवार से उनके रोग-जन्तुओं को और खुजली को भी नष्ट किया जा सकता है। इससे बवासीर और छोटे-बड़े राजरोग को नष्ट किया जा सकता है। इसके सेवन से वीर्य पुष्ट होकर वीर संतान की उत्पत्ति होती है।

**''गुग्गुल''**-नदी वा समुद्र के पास वृक्ष विशेष का निर्यास अर्थात् गोंद होता है, जिसको अग्नि पर जलाने से सुगन्ध उत्पन्न होती है और अनेक प्रकार के रोगों को नष्ट करता है। जिस घर में गुग्गुल आदि सुगन्धित द्रव्यों की गन्ध की जाती है, वहां रोग नहीं होता। यह हवन की सामग्री में भी मिलाया जा सकता है।

**''कुष्ठु'' वा ''कूट''** औषध-इसके दो नाम और भी हैं ''नद्यमार'' एवं ''नद्यरिष''- ये औषध हिम वाले ठण्डे देशों में होता है। उसको प्राप्त करके ज्वर, दु:खदायिनी पीड़ा, प्रतिवर्ष होने वाला ज्वर, सिर में पीड़ा करने वाले एवं सदा फूटन करने वाला ज्वर समाप्त किया जा सकता है। ''कुष्ठ'' महौषध विद्वानों के लिए बालकपन, यौवन और बुढ़ापे तीनों पनों में सोमरस के समान गुणकारी है, स्वास्थ्यवर्द्धक है। इसको दिन में से तीन बार सेवन करना चाहिए। नदी में उत्पन्न रोगों को यह मिटाता है। जहाँ नाव और यान अग्नि से चलते हैं वहाँ कुण्ठ औषध बड़ा उपकारी है।

**''पिप्पली'' औषधि**-विक्षिप्त, उन्मत्त की औषधि, बड़े घाव वालों की औषधि ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, अर्श, प्लीहा, शूल, आम आदि रोगों को नाश करती है। ये औषधि पृथिवी के अन्दर बोई और खोदी जाती है।

**''अरूस्त्राणम्-ओषध''**-फोड़ो को पकाकर भरने वाला उत्तम ओषध पृथिवी से निकालकर लाया जाता है। महाक्लेश नाशक, ब्रह्मज्ञान रूप ''औषध आस्त्रावस्थ'' है, जो पृथिवी आदि के प्राय: सब पदार्थों में वर्तमान है।

**साँप के विष का इलाज-** साँप के विषहर या विष को प्रतिकार करने वाली औषधि को ''तबूवम'' एवं ''तस्तुवम्'' कहते है। सदैव अपने शब्दों से, मेद्य के सामन गर्जन शक्ति से, अपने वचन से, आत्मबल बढ़ाकर अज्ञान का नाश करके विद्यारूपी सूर्य का प्रकाश करता है। विष से विष का नाश करता है। सर्प को मार डालता है। उसके विष को नाश कर देता है।

- **मृदुला अग्रवाल** 19, सी सरत बोस रोड, कोलकाता-700020, मो. 9836841051

**( शेष अगले अंक में )**

# आपकी सन्तान ही देश का भविष्य है

- रामफल सिंह आर्य, म.न. 78/एस-4, बी.एस.एल. कॉलोनी, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी हिमाचल प्रदेश-175019, मो. 09418477714

**यह बात मन में अवश्य रखिये कि आपकी संतानें आपके लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यदि वे बन गई तो जानिये सब बन गया और कहीं बिगड़ गई तो लाख धन दौलत हो, सम्पत्ति हो, बेकार हो जाती है। यदि हमारे बच्चे हमारा सम्मान करना सीख गये तो जीवन सफल हो जाता है, नहीं तो आज नर्क तो बनता ही जा रहा है।**

जो माता-पिता आवश्यकता से अधिक मोह दिखाकर बच्चों की हर उचित अनुचित मांग पूरी करते रहते हैं उनकी संतानें बड़ी होकर उनके लिए कष्टदायी बन जाती हैं। बच्चा क्या भाषा बोल रहा है, कैसा व्यवहार कर रहा है, इस पर अभिभावकों को कड़ी दृष्टि रखनी चाहिए। जब वह देखता है कि जो कुछ उसने कह दिया उसकी वही बात पूरी हो जाती है तो उसमें जिद की भावना जन्म ले लेती है। यदि माता-पिता ना नुकर करते हैं तो वह रोता है, हाथ-पांव पटकता है तो माता-पिता का दिल पसीज जाता है। बस उसे पता चल जाता है कि अपनी मांग मनवाने का यह उत्तम ढंग है। हमने कितने ही परिवारों में देखा है कि बच्चे की यदि कोई मांग पूरी नहीं होती या उसे थोड़ा सा डांट दिया तो वह असभ्यता से बोलने लगता है। कई बच्चे तो स्वयं कमरे में जाकर अन्दर से कुण्डी लगा लेते हैं। माता-पिता अनुनय-विनय करते रहते हैं। उन्हें माता-पिता की कमजोरी का पता चल जाता है। वे और अधिक नकचढ़े हो जाते हैं। ऐसे अभिभावकों को जब कोई सुझाव देता है, बच्चों को नियंत्रण में रखने की बात कहता है तो उनका उत्तर होता है-अजी कुछ बड़ी बात नहीं है, बच्चा है, बड़ा होकर स्वयं समझ जायेगा। याद रखिये बड़े होकर वे स्वयं नहीं समझेंगे, वे तो माता-पिता को समझायेंगे। जो माता-पिता पांच सात वर्ष के बालक को नहीं संभाल सकते क्या वे बीस-पच्चीस वर्ष के युवक को नियंत्रण में रख पायेंगे? कदापि नहीं।

आज का युग भौतिक चकाचौंध का युग है। आज लोगों की मान्यता यही बन गई है कि यदि हमारे पास धन है तो सब कुछ है और यदि धन नहीं है तो जीवन बेकार है। बहुत सारे पति-पत्नी ऐसे हैं जो दोनों ही नौकरी करते हैं। ऐसे में बच्चे या तो घर में सारा दिन अकेले रहते हैं या फिर नौकरों के भरोसे। माता-पिता तो दोनों सुबह काम पर निकल जाते हैं जो सायंकाल ही आ पाते हैं। पीछे से बच्चों ने क्या किया। टी.वी. देखा या आपस में लड़ाई झगड़ा किया या उछल-कूद मचाई, इसके लिये माता-पिता के पास समय कहाँ। बस अधिक से अधिक धन कमाकर यह समझ लेना कि हमने बच्चों के लिए सब कुछ कर दिया। इन्हें खूब पैसे देते हैं, इतने से ही सब कार्य नहीं होते। उन्हें माता-पिता का मार्गदर्शन कदम-कदम पर चाहिए। अपनी हर समस्या, हर उलझन में उनकी भागीदारी चाहिए। हम नीचे कुछ विचार-बिन्दु दे रहे हैं, उन पर चिन्तन कीजिये और अच्छा लगे तो उन्हें व्यवहार में भी लाईये:-

1. बच्चों को प्यार कीजिए, परन्तु सिर मत चढ़ाईये। जैसे ही वह गलती करे, अपशब्द बोले या असभ्यता करे उसे तुरन्त रोकिये। पहले प्यार से समझाइए यदि न माने तो दण्ड दीजिए। आवश्यक हो तो थोड़ी देर के लिए बोलना भी बंद कर दें।

2. उन्हें आवश्यकता से अधिक खाने-पीने की या बाजार की वस्तुएँ मत दिलवाईए। ऐसी वस्तुएँ जहाँ उनकी आदतें बिगाड़ती हैं, वहीं उनके स्वास्थ्य को भी बिगाड़ती हैं।

3. बच्चों को व्यर्थ में पैसे देने की आदतें मत डालिये। जिस कार्य के लिए वे पैसे मांग रहे हैं, वह कार्य यदि उचित हो तो स्वयं करके दीजिए।

4. कभी भूलकर भी उन्हें स्वयं अपशब्द न सिखाईए-आंख मार दो, फ्लाईंग किस कर दो, इत्यादि बातें यदि आपका कोई मित्र या रिश्तेदार भी करता है तो उसे स्पष्ट रूप से इंकार कर दें। पति-पत्नी भी परस्पर बच्चों के सामने लड़ाई-झगड़ा न करें।

5. बच्चों के पीछे से कभी-कभी उनकी पुस्तकों, कापियों या सामान का स्वयं निरीक्षण करें। कहीं ऐसा तो नहीं है कि कोई आपत्तिजनक बात या चित्र आपको मिले।

6. प्रतिदिन सुबह-शाम उनके लिए कुछ समय निकालिये। उनकी बातें, उनकी समस्याएँ सुनिये। उनका समाधान करिये और उन्हें उचित मार्गदर्शन दीजिए।

7. उन्हें धार्मिक शिक्षा भी अवश्य दें। सच्चे आस्तिक बनाईए। धर्म (वैदिक धर्म) के प्रति उनके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न कीजिए। रविवार या अन्य विशेष उत्सव आदि में उन्हें अपने साथ सत्संग में लेकर जाएं। जो कोई विद्वान या उपदेशक आदि उत्सव में आये हों, उनसे बच्चों को मिलवाईए। घर पर उनका वार्तालाप करवाईए।

8. बच्चों के गुरु बनने का प्रयास कीजिए। माता-पिता ही संतानों के प्रथम गुरु होते हैं।

9. उन्हें अधिक टी.वी. देखने या मोबाईल फोन का प्रयोग करने से बचाईए। टी.वी. या फिल्मों से उनके चरित्र में प्राय: दोष ही उत्पन्न होते हैं। अपनी देखरेख में उन्हें स्वस्थ मनोरंजन या शिक्षाप्रद कार्यक्रम ही दिखायें।

10. उन्हें परिश्रम करने की आदत डालें। प्रयत्न कीजिए कि अपने छोटे-छोटे कार्य वे स्वयं ही करें। अपनी पुस्तकें, कपड़े, जूते आदि उचित स्थान पर वे स्वयं रखें और स्वयं ही संभालें। इससे उनमें स्वावलम्बन की भावना जागेगी।

11. उनके कपड़ों का सही चुनाव कीजिए। कुछ भी पहन लेना असभ्यता है। आज प्राय: लड़कियाँ ऐसे कपड़े डालती हैं जो देखने वालों को भी अच्छे नहीं लगते। ध्यान रखिये फैशनेबल, भड़ाकाऊ कपड़े दूषित मनोवृति के परिचायक हैं। तन पूरा ढका रहे। कपड़े शरीर को ढकने के लिए होते हैं उघाड़ने के लिए नहीं। आज भारतीय संस्कृति को रोग लग चुका है। दूषित मनोवृतियाँ समाज में पनप रही हैं। इसमें कपड़ों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

और भी कई बातें हो सकती हैं लेकिन यहाँ पर मुख्य रूप से हमने संकेत कर दिया है। यह बात मन में अवश्य रखिये कि आपकी संतानें आपके लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यदि वे बन गई तो जानिये सब बन गया और कहीं बिगड़ गई तो लाख धन दौलत हो, सम्पत्ति हो, बेकार हो जाती है। यदि हमारे बच्चे हमारा सम्मान करना सीख गये तो जीवन सफल हो जाता है, नहीं तो आज, परिवार नर्क तो बनते जा ही रहे हैं।

# हंसो और हंसाओ

– रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

❑ **पहला दोस्त**-यार शादी क्या होती है
**दुसरा दोस्त**-शादी बिजली के दो तार की तरह है।
**पहला दोस्त**-कैसे?
**दुसरा दोस्त**-सही जुड़ते तो प्रकाश ही प्रकाश होता है और गलत जुड़े तो भड़ाभड़ भड़ाभड़ पटाखे की तरह आवाज होती है।

❑ **पत्नी** ने अचानक **पति** को जोर से थप्पड़ मारा
**पति** बेचारा तिलमिला उठा और बोला मारा क्यों?
**पत्नि**-जी मच्छर था और मेरे जीते जी कोई और आपका खून चूसे ये मुझसे बर्दाश्त नहीं होता।

❑ एक नई-नई शादी हुई।
**पति** सुबह-सुबह अपनी **पत्नी** पर पानी डाल देता है।
**पत्नी**-नींद से उठती हुई पानी क्यों डाला?
**पति**-तेरे बाप ने बोला था कि मेरी बेटी फूल की कली है। उसे मुरझाने मत देना।

❑ **पहला दोस्त**-ससूराल में दामाद का इतना सम्मान क्यों होता है।
**दूसरा दोस्त**-क्योंकि वे लोग जानते हैं कि यही वो महान आदमी हैं जिसने हमारे घर का तूफान संभाल रखा है।

❑ **डॉक्टर**-आपके दाँत कैसे टूट गये।

❑ **पप्पू**- जी वो बीवी ने कड़क रोटी बनाई थी।
**डॉक्टर**-तो खाने से मना कर देते
**पप्पू**-जी वही तो किया था।

# माता-पिता अड़चन नहीं आपके दिल की धड़कन है

- ऋषि राम कुमार

माता-पिता परिवार का एक अभिन्न अंग होते हैं उनके बगैर तो परिवार बन ही नहीं सकता, माता पिता और बच्चों का खून का रिश्ता होता है जिनके अन्दर समर्पण और आकर्षण कूट-कूट कर भरा होता है, ये बच्चों के लिए घर के आधार और पतवार हैं। बच्चों के हर बढ़ते कदम पर उनकी मदद करना उनका कर्तव्य है। उनके लिए दिन रात आंधी तूफान नहीं देखते, बल्कि पैसा कमाने के लिए पूरे जमाने से युद्ध करते हैं क्योंकि बच्चों का पालन पोषण शिक्षा उनके मुख्य उद्देश्य हैं इसके लिए उनको बहुत मेहनत करनी पड़ती है रात को आराम नहीं, दिन को चैन नहीं, हर वक्त एक ही सोच, कि किसी तरह हमारे बच्चे इतने पढ़ लिख जायें, कि समाज में एक उचित स्थान प्राप्त हो जाये, उनके मन की धारणा होती है, उनको अपनी भी सुध नहीं होती, उनकी सारी सोच बच्चे ही हैं, उनके लिए अगर जरूरत पड़े तो गहने और मकान भी बेच देते हैं, उनके मन में छल और कपट नहीं होता, वो तो बच्चों के लिए सब कुछ कर सकते हैं जब बच्चा छोटा होता है तो माँ उसको लेकर बाहर घूमती है उसको बच्चे का वजन महसूस नहीं होता, यह एक विचित्र सम्बन्ध है जिसे लिखा नहीं जा सकता, महसूस किया जा सकता है माता-पिता के बगैर तो बच्चों का अस्तित्व ही नहीं है, इनका सम्बन्ध इतना गहरा और सवेदन शील होता है जिसका उदाहरण मिलना कठिन है माता-पिता बच्चों के लिये सब कुछ दांव पर लगा देते हैं उनकी यह इच्छा कभी नहीं होती कि बड़े होकर बच्चे उनकी सेवा करेंगे या नहीं, वो निस्वार्थ भावना से ओतप्रोत होते हैं उनके मन में बच्चों के प्रति नकारात्मक सोच होती ही नहीं, बच्चे चाहे कितना भी कष्ट दें वो कभी किसी से शिक़ायत नहीं करते, महात्मा गांधी जी ने कहा है कि ''सही उद्देश्य के लिए किया गया प्रत्येक कार्य सदफल को प्राप्त होता है।'' इसलिए माता-पिता की सोच उनके हित में ही होती है।

ऋषि राम कुमार

वक्त धीरे-धीरे आगे बढ़ता है और बच्चे जवान हो जाते हैं माता पिता बूढ़े हो जाते हैं बच्चों की शादी हो जाती है और उनके बच्चे भी हो जाते हैं पैसे की होड़, पाश्चात्य सभ्यता, बच्चों के बारे में सोचना उनको माता-पिता से अलग सा कर देता है, हर व्यक्ति भाग रहा है, न जाने कहाँ जाना चाहता है, अब माता-पिता उनको घर की अड़चन नजर आने लगते हैं जिस माता-पिता ने इनके लिए सारी अपनी इच्छाओं का त्याग कर दिया, आज वही बच्चे उनसे सीधे मुंह बात भी नहीं करते, यह उनके लिए असहज स्थिति है उनको दु:ख बहुत होता है लेकिन दु:ख को पी जाते हैं यह स्थिति हर घर में नहीं है बहुत परिवार ऐसे हैं जहां माता-पिता का पूरा आदर और सत्कार होता है क्योंकि वो जानते हैं कि हमारे माता-पिता ने हमारे लिए बहुत दु:ख झेले हैं तो यह भी जानते हैं कि हमारे बच्चे बड़े हो रहे हैं वो सब कुछ देख रहे हैं इसलिए उनके मन में एक सोच जो भविष्य का अनुभव कर रही है जैसा भी समझिये वो बच्चे माता-पिता की सेवा में लीन हैं, वो माता-पिता को घर की अड़चन नहीं समझते बल्कि अपने दिलों की धड़कन समझते हैं। कई बार क्रोध और तनाव हो जाता है लेकिन फिर स्थिति सामान्य हो जाती है माता-पिता भी समझते हैं कि बच्चे आजकल की परिस्थितियों में इस कदर फंसे हुये हैं कि समय नहीं दे पाते, वो बच्चों से कभी शिकायत नहीं करते, उनको दो समय की रोटी, जैसी भी मिल जाये खा लेते हैं कोई शिकवा शिकायत नहीं, वो अड़चन नहीं बनना चाहते, वो अपने बच्चों की बुराई किसी से नहीं करते, यह उनका बच्चों के प्रति लगाव है आन्तरिक प्रेम होता है बच्चों को चाहिए कुछ अपनी इच्छाओं की कटौती करें और माता-पिता को कुछ समय दें, इनकी सेवा ही पुण्य

की प्राप्ति है।

ये वही माता-पिता है जिन्होने आपको इसी घर में ही छोटे से बड़ा किया है इनका अहसान कभी नहीं उतारा जा सकता, अपना सारा जीवन इन्होंने आपके लिये दाव पर लगा दिया, लेकिन आज वो तन्हा महसूस कर रहे हैं, आज आपको माता-पिता नकारात्मक सोच वाले दिखाई दे रहे हैं, आप क्या कर रहे हैं कहाँ जा रहे हैं थोड़ा सोचिए, अपने मन को सु-मन बनाइये मधु और सगुन्ध का मेल होता है फूल, काटों से घिरा रहता है काटों से घायल होता रहता है लेकिन काटों को नहीं छोड़ता, आपके माता-पिता ने जिन्दगी में बहुत दु:ख झेले हैं लेकिन आपको सुरक्षित रखा, उन्होंने आपको फूलों की तरह रखा, लेकिन अब वो आपको काटों की तरह चुभने लगे हैं जब तू छोटा था बिस्तर गीला कर देता था माता तुझे सूखे कपड़े पर सुलाती थी स्वयं गीले पर सो जाती थी, जिस डाली में फल लगते हैं वो झुक जाती है उसमें अभिभाव नहीं होता, नम्रता होती है, तू भी नम्र बन, आपको किस बात का घमंड है आप माता-पिता के आगे कुछ भी नहीं हैं उनके बगैर न तो तेरा नाम है और न पहचान है, सच्चा प्रेम आपको माता-पिता से ही मिलेगा, बाकी संसार में आपको धोखा और फरेब ही मिलेगा, बुढ़ापे में माता-पिता का ख्याल रखना पुण्य का काम है तालमेल का बहुत महत्व है आपस में समरसता जरूरी है। परिवार के लिए आपको कुछ कुर्बानी करनी ही होगी, विचारों को तालमेल से सुलझाइये, खान-पान सात्विक रखिये, विचार अच्छे बनेंगे, सहनशीलता अपनाइये, नशा मत कीजिए, स्वास्थ्य के साथ नैतिक पतन भी होता है, विचारों के तालमेल से मन को शान्ति-मिलती है अगर आप अधूरे मन से काम करेगें, तो आपको सफलता नहीं मिलेगी, अगर आपकी इच्छायें परिवार में बाधक हैं तो उनको समाप्त कर दीजिए। माता-पिता आपके घर की शान हैं अड़चन, आपके दिल की धड़कन हैं सूर्य की तरह रोशनी फैलाइये, आपकी माता-पिता की सेवा की रोशनी जब पास पड़ोस में जायेगी, तो आपका नाम होगा, आप एक उदाहरण बन जायेंगे। मुझे आशा है कि आप श्रवण कुमार बन कर माता-पिता की सेवा करेंगे।

# अभिनन्दन

हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन-रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।
तुम सीमा पर रणवीर खड़े, चौकसी कर रहे हो डटकर।
घुसपैठ नहीं कर पाता है, आतंकी हो, चाहे तस्कर।
है देश सुरक्षित तुमसे ही, बलवीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन-रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

तुम जागरूक हो सीमा पर, तब देश सुरक्षित सोता है।
शत्रु को मार गिराते हो, माँ सर गर्वोन्नत होता है।
आतंकी का सर कलम करो, शमशीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन-रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

हो तेज धूप या बर्फ पड़े, रहते हो तुम मुस्तैद सदा।
विचलित तुम होते नहीं वीर, चाहें आए कोई विपदा।
शत्रु तुमसे भय खाता है, अति वीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन-रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

क्या भूख-प्यास, क्या नींद तुम्हें, चिन्ता इनकी होती ही नहीं।
अवचेतन में भी चेतन है, तव आँख कभी सोती ही नहीं।
सीमा की रक्षा को रहते, गंभीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन-रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

हम करने आए हैं, साथी वीरता, तुम्हारी को प्रणाम।
हे शक्ति पुंज, हे शूरवीर, ऊँचा रखना भारत ललाम।
गद्दारें से चौकस रहना, मति धीर तुम्हारा अभिनन्दन।
हे वीर तुम्हारा अभिनन्दन-रणधीर तुम्हारा अभिनन्दन।

**-हितेश कुमार शर्मा**

---

**माता-पिता आपके घर की अड़चन नहीं,**
**बल्कि बच्चों के दिलों की धड़कन हैं।**
**माता-पिता बच्चों के लिए सब कुछ त्याग देते हैं,**
**आप नहीं समझते तो यह आपका बचपन है।**
**उठो जागो माता-पिता को**
**पहचानने की कोशिश करो,**
**आपके शरीर के हर खून के कतरे में**
**उनका तन मन है।**

-112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुरुग्राम (हरियाणा)

# अंधविश्वासों से दूर रहें

- अशोक आर्य

माता-पिता जहाँ अपनी सन्तान को ग्रहण करने योग्य बातें सिखायें, वहाँ यह भी आवश्यक है कि उन्हें अनेक प्रकार के मिथ्या विश्वासों, भूतप्रेत विषयक मूर्खतापूर्ण धारणाओं तथा विज्ञान एवं सृष्टिक्रम विरूद्ध मान्यताओं के जाल में फंसने से बचायें। भूतप्रेतों, डाकिनी, शाकिनी एवं योगिनी आदि कल्पित योनियों के प्रति अंधविश्वास यों तो संसार के सभी देशों में पाया जाता है, किन्तु भारत की धरती इसके लिए अधिक उर्वरा सिद्ध हुई है।

भूतप्रेत तथा मृत व्यक्तियों की अशान्त आत्माओं द्वारा संसारी लोगों को पीड़ित करने के झूठे किस्से जनसाधारण में तो शास्त्रवाक्यों की भांति सत्य समझे ही जाते हैं। प्राय: देखा जाता है कि सुपठित तथा शिक्षित व्यक्ति भी इन मूर्खतापूर्ण धारणाओं के जाल से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाते। ऋषि दयानन्द ने इस प्रसंग में मनुस्मृति के निम्न श्लोक को उद्धृत कर यह स्पष्ट कर दिया कि प्रेत शब्द वैदिक एवं आर्ष शास्त्रों में मृत व्यक्ति का वाचक है, न कि किसी भयावनी योनि विशेष का। श्लोक इस प्रकार है-

**गुरो प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्।**
**प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्धयति॥**

(मनु. 5/65)

यहाँ प्रेत शब्द मृतक शरीर का वाचक है जब कि प्रेतहार उन व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हुआ है तो मृत शरीर को उठाकर श्मशान तक ले जाते हैं। मनुस्मृति के टीकाकार कुल्लूक भट्ट ने भी 'प्रेतस्य' का अर्थ 'मृतस्य' ही किया है। इसी प्रकार संस्कृत का 'भूत' शब्द भी अनेकार्थवाची तो है, किन्तु उससे किसी डरावनी योनि विशेष का अर्थ लेना उचित नहीं। संस्कृत साहित्य में भूत जो हो चुका, उत्पन्न, निर्मित, अतीत, जीवित प्राणी, जड़ तत्त्व आदि के अर्थों में आता है। शास्त्रों में भूतात्मा का प्रयोग जीवात्मा के लिए हुआ है। मनु जब विद्या और तप से भूतात्मा की शुद्धि की बात करते हैं। (5/106) तो टीकाकार कुल्लूक भट्ट इसका अर्थ ( **सूक्ष्मादिलिंगशरीरावच्छिन्नो जीवात्मा** ) करता है। उपनिषदों में **'भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः'** का प्रयोग मिलता है। यहाँ सभी प्राणियों के लिए भूत शब्द का प्रयोग हुआ है।

प्राय: देखा जाता है कि अनेक प्रकार के मानसिक रोगों के कारणों को न समझकर लोग ऐसे रोगियों में भूतप्रेत आदि हानिकारक योनियों का आवेश मान लेते हैं तथा मनोवैज्ञानिक चिकित्सा न कराकर अनेक प्रकार के मन्त्र तन्त्र पुरश्चरण आदि अपकृत्यों द्वारा रोगी का उपचार कराते हैं। इस प्रसंग में ऋषि ने स्पष्ट किया है कि सन्निपात आदि शारीरिक और उन्माद आदि मानस रोगों के मूल कारणों का निदान न कर सकने के कारण अज्ञानी लोग यह मान लेते हैं कि रोगी में भूत-प्रेत, चुड़ैल आदि का प्रवेश हो गया है। वस्तुतः, संस्कृत भाषा में भूतप्रेत से भिन्न यक्ष, राक्षस, पिशाच, नक्तंचर (निशाचर) आदि अन्य शब्द भी हैं जो जन सामान्य में अपयोनियाँ मानी जाती हैं। किन्तु यदि इनके व्युत्पत्तिलभ्य अर्थों का विचार किया जाये तो इनसे ऐसे जीव जन्तुओं, कीटाणुओं तथा रोग उत्पन्न करने वाले क्रिमियों का अभिप्राय लेना होगा जो मनुष्य शरीर को हानि पहुँचाते हैं। रोग उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म कृमि तथा विषाणु ही राक्षस, यातुधान तथा पिचाश हैं। ऐसे रक्षगणों (राक्षसों) को नष्ट करने वाला वैद्य ही राक्षोदा कहलाता है। इस विचार की पुष्टि पाश्चात्य लेखकों ने भी की है। बैबिलोनिया और असीरिया की मिथक कथाओं का विवेचन करने वाला विद्वान् डोनाल्ड मैकेंजी लिखता है- "Germs of deseases were depictd by lively imagination as invisible demons who derived nourishment from the human body. (सत्यार्थ प्रकाश, भाष्य, पं. वाचस्पति लिखित से उद्भुत पृ. 119) अर्थात् विभिन्न रोग उत्पन्न करने वाले क्रिमियों की अदृश्य राक्षसों के रूप में कल्पना कर ली गई। ये राक्षस कहलाने वाले क्रिमि शरीर से ही पोषण प्राप्त करते हैं।

तथापि यह स्वीकार करना होगा कि भूत प्रेत आदि के नाम पर उल्लू सीधा करने वाले पाखण्डी

लोगों की भी इस संसार में कमी नहीं है। ऐसे दुष्ट प्रकृति के लोग भोले-भाले लोगों की अंधविश्वासजन्य प्रकृति का लाभ उठाकर अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं। ऐसे तथाकथित ओझा तथा झाड़फूँक करने वाले लोगों को स्वामी दयानन्द धूर्त, महामूर्ख, पाखण्डी, अनाचारी तथा स्वार्थी कहते हैं तथा जन साधारण को इनसे बचने का उपदेश देते हैं। भूत-प्रेत आदि के मिथ्या प्रवादों को फैलाने तथा इससे अपना स्वार्थ सिद्ध करने में कभी-कभी ऐसे लोग भी सहायक सिद्ध होते हैं जिनसे हम इस प्रकार के अंधविश्वासों को प्रचारित करने की आशा भी नहीं रखते। आज के सनसनीखेज पत्रकारिता के युग में अनेक पत्र-पत्रिकायें भूत-प्रेत विशेषांक प्रकाशित करती हैं। यंत्र-मन्त्र डोरा धागा ताबीज आदि के बहाने लोग अपनी दुकानदारी चलाते हैं। हिन्दी की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका वर्ष में एक बार भूत-प्रेत विशेषांक निकालती है जिसमें कपोल कल्पित कहानियों के द्वारा पाठकों को अंधविश्वासी बनाया जाता है। कहानी पत्रिका मनोहर कहानियाँ भी ऐसे विशेषांक प्रकाशित करती हैं। ऋषि दयानन्द की सम्मति में ऐसे पाखण्डों का सर्वथा उन्मूलन तभी सम्भव है जब जनसाधारण में जागरूकता पैदा की जाये। इसके लिए मनुष्य के चिन्तन और विचार में आमूलचूल क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना आवश्यक है। मानव जब तक अपने में वैज्ञानिक सोच पैदा नहीं करता तथा प्रत्येक विचार तथा कृत्य को तर्क की कसौटी पर कसता नहीं, तब तक बौद्धिक विकास में बौना ही रहता है।

बालकों का चित्त अत्यन्त कोमल तथा प्रत्येक प्रकार के संस्कार को ग्रहण करने में प्रवृत्त रहता है। यदि बाल्यकाल में उनको भूत-प्रेतों की कल्पित कहानियाँ सुनाई जायें तो आगे चलकर वे इस प्रकार के अंधविश्वासों से कभी मुक्त नहीं होंगे। इसलिए माता-पिता का यह आवश्यक कर्त्तव्य हो जाता है कि वे सन्तान के कानों में ऐसी मिथ्या विश्वासपूर्ण कथायें पड़ने ही न दें। जहाँ ओझा और भूत-प्रेत का निवारण करने वाले ढोंगी पुरुष अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मनोवैज्ञानिक रोगों से ग्रस्त स्त्री-पुरुषों की चिकित्सा के बहाने अनेक प्रकार के पाखण्ड रचते हैं तथा उनसे देवता की भेंट तथा प्रसाद के नाम पर धनहरण का षड्यन्त्र रचते हैं, वहाँ स्वामी दयानन्द की बताई युक्ति का प्रयोग ही समीचीन है। महाराज का यह स्पष्ट आदेश है कि जो कोई बुद्धिमान उनकी भेंट पाँच जूता, दण्डा व चपेटा लात मारें तो उनके हनुमान, देवी और भैरव झट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं। क्योंकि वह उनका केवल धनादि हरण करने के प्रयोजनार्थ ढोंग है।

**फलित ज्योतिष तथा ग्रह शान्ति का पाखण्ड**

बच्चों को जहाँ भूत प्रेतादि के कल्पित भय से दूर रखना आवश्यक है वहाँ यह भी जरूरी है कि वे भाग्यवादी न बनकर पुरुषार्थवादी बनें। भारत में जहाँ भूगोल, खगोल तथा ज्योतिष आदि वैज्ञानिक अध्ययनों का विकास हुआ वहाँ फलित ज्योतिष, फलादेश, भविष्य कथन, हस्तरेखा, सामुद्रिक शास्त्र जैसे पाखण्डपूर्ण विधि विधानों का भी प्रचलन हुआ जो मनुष्यों को परिश्रम तथा अध्यवसाय से विमुख कर मात्र भाग्य पर निर्भर रहना सिखाते हैं। फलित ज्योतिष का ही एकअंग जन्मपत्र बनाना तथा फलादेश सुनाना है। गणित ज्योतिष एक परिपूर्ण विज्ञान है जो गणितीय प्रक्रियाओं से वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालता है जबकि फलित सर्वथा कपोल कल्पित तथा युक्ति एवं तर्क विरूद्ध वागजाल मात्र पाखण्ड है। इन फलितज्ञ ज्योतिषयों को स्वामी दयानन्द ने ज्योतिर्दिदाभास कहा है। भोले-भाले गृहस्थों के द्रव्यापहरण का षड्यन्त्र रचकर वे स्वनिर्मित जन्मपत्र का वाचन करते हैं और क्रुर ग्रहों का भय दिखलाकर उनकी शान्ति के लिए विभिन्न प्रकार के पूजा-पाठ दान आदि करवाते हैं।

तथ्य तो यह है कि पृथ्वी की ही भाँति सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि आदि सभी ग्रह जड़ हैं तथा वे मनुष्य के भाग्य का फैसला करने में असमर्थ हैं। वेदमन्त्रों के वास्तविक भाव को न समझ कर मध्यकालीन आचार्यों ने जब वैदिक यज्ञों को जटिल कर्मकाण्ड बहुत तथा मात्र शब्द साम्य के आधार पर अनेक निरर्थक कर्मों के मन्त्रों के विनियोगों का विधान कियात नवग्रहों की पूजा में कतिपय मन्त्रों को नियोजित कर दिया गया। उदाहरणार्थ सविता देवता का मन्त्र **'आ कृष्णेन रजसा'** (यजु. 33/43) सूर्य का वाचक माना गया तो **'उद्बुद्धस्वाग्ने'** (यजु. 15/54) को 'बुध' का बोधक स्वीकार

किया गया। सर्वाधिक हास्यास्पद तो 'शनि' के लिए विनियुक्त मन्त्र व्यवस्था थी, क्योंकि **'शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तुनः** (यजु 36/12) में प्रयुक्त 'शं नो' पद जहाँ हमारे लिए कल्याण और मंगल का अर्थ देते हैं वहाँ उन्हें एक ही मान कर शनैश्चर के लिए प्रयुक्त मान लिया गया। ऐसे विनियोग रूप समृद्ध नहीं थे।

इस प्रकार फलित ज्योतिष के छलावे और प्रपंच का रहस्योद्घाटन कर ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट किया कि ज्योतिष शास्त्र तो मिथ्या नहीं है क्योंकि उसके अन्तर्गत अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, खगोल विद्या तथा अन्तरिक्ष विद्या आदि जो विषय आते हैं वे तो सभी विज्ञान के अनुकूल हैं जब कि ग्रहों को क्रूर अथवा सौम्य होने तथा किसी व्यक्ति के भाग्य में निर्णायक होने का विचार सर्वथा मिथ्या एवं प्रमाण रहित हैं। अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन तथाकथित ज्योतिषियों ने अनेक कपोल कल्पित श्लोकात्मक ग्रन्थ भी बनाये जिनमें ऐसी-ऐसी मिथ्या बातें लिखी हैं मानों आदमी का भूत वर्तमान और भविष्य सब कुछ इन ज्योतिषियों के ही अधिकार में है। यथा एक फलित ग्रन्थ में लिखा है:-

**शनिक्षेत्रे यदा भानुः भानुक्षेत्रे यदा शनि।**
**सदा एवं भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति॥**

अर्थात् शनि के क्षेत्र में सूर्य हो और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो बालक होते ही मर जायेगा, चाहे साक्षात् शंकर ही उसके रक्षक क्यों न हों? वस्तुतः यह सारा पाखण्ड और प्रपंच गृहस्थियों के धन का हरण करने के लिए ही रचा गया था। फलित के नाम पर चलने वाले पाखण्ड को ही दृष्टि में रखकर आर्षप्रज्ञा के धनी आचार्य विष्णुगुप्त ने अपने अर्थाशास्त्र में लिखा था।

**नक्षत्रमति पृच्छन्तं बालमर्थोऽतिवर्तते।**
**अर्थो ध्यर्थस्यं नक्षत्रं किं करिष्यन्ति तारकाः॥**
(9/142/4)

अर्थात् नक्षत्रों के फल को पूछने वाला राजा बाल बुद्धि ही है। वह अपने अभीष्ट फल को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि अर्थ की बुद्धि के लिए तो पुरुषार्थ अपेक्षित होता है। ये तारे (ग्रह) हमारा क्या हानि लाभ करेंगे?

इस प्रकार फलित ज्योतिषा, ग्रहशान्ति आदि पाखण्ड जाल को छिन्न-भिन्न कर जन्म पत्र को शोक पत्र बता ऋषि दयानन्द ने मानव को तर्कसिद्ध विचारों को स्वीकार करने और पुरुषार्थ युक्त जीवन यापन करने का परामर्श दिया।

फलित ज्योतिष की ही भाँति शीतला जैसे अप देवी देवताओं की पूजा अर्चना आदि को भी पाखण्ड ही मानना चाहिए। हमारे देश में तो चेचक जैसी छूत की बीमारियों को भी शीतला जैसी कल्पित देवी के प्रकोप का परिणाम माना जाता है। ऐसे रोगों की समुचित चिकित्सा कराने की अपेक्षा अज्ञानी लोग डोरा, गण्डा और ताबीज के चक्कर में पड़ते हैं जिससे रोगी का मृत्युमुख गामी होना अवश्यम्भावी हो जाता है।

– नवलखा महल, उदयपुर,
'सत्यार्थ सौरभ' से साभार

---

**( पृष्ठ 21 का शेष )**

दूसरों को खिलाते हैं। यह भाव मन में आ जाने पर संयुक्त परिवार विघटन की तरफ अग्रसर हो जाता है। लोगों के मन में ऐसा भाव आने पर परिवार बिखर जाता है। कोई नगरों की तरफ पलायन करता है तो कोई मूल परिवार से अलग हटकर आशियाना बना लेता है। अब ऐसे परिवारों की भरमार सी होती जा रही है।

भौतिकवाद ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया है। जब यह बढ़ता है तो व्यक्ति स्वतन्त्र रूप में आ जाता है। वह महत्वाकांक्षा पाने की कोशिश करता है। परिणामतः संयुक्त परिवार टूटने लगते हैं। सामाजिक तौर पर मुख्यकर्ता की निरंकुशता, स्त्रियों की दुर्दशा, गतिशीलता में बाधा भी इसका कारण है।

संयुक्त परिवारों का विघटन रोकने के लिए सांस्कृतिक प्रशिक्षण दिया जाना भी जरूरी है। सामाजिक सुरक्षा प्राप्त अनुभवों का संचरण, अनुशासन की सीख जैसी प्रथा को आगे बढ़ाते हुए निराश्रितों की रक्षा करनी होगी।

– साभार हिन्दु सभावार्ता से

# आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री विक्रमसिंह जी ठाकुर, दिल्ली
2. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
3. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
4. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
5. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
6. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
7. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
8. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
9. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
10. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
11. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिंरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आज़ादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपु.
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
59. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
60. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
61. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद् झज्जर
62. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
63. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
64. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
65. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
66. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
67. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
68. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
69. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
70. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
71. श्री रवि कुमार जी आर्य, सक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
73. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
74. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
76. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
77. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेवली, दि.

# महात्मा हंसराज

महर्षि दयानन्दजी लिखते हैं कि जिन्हें विद्या, धर्म परोपकारादि के कार्य करने हों उन्हें चाहिए कि गृहस्थ के झंझटों में न फँसे। गृहस्थ आश्रम स्वयं जिम्मेदारी का स्थान है, परन्तु जो व्यक्ति इसका दायित्व सँभालते हुए अपना तन-मन परोपकार के लिए समर्पित कर देता है उसे देव श्रेणी का पथिक ही मानना चाहिए। साधु उसे कहते हैं जो दूसरों के कार्यों को साधे और स्वयं साधनामय हो। महात्मा हंसराज जी में ये दोनों ही गुण विद्यमान थे। जब सन् 1933 में अजमेर में ऋषि-निर्वाण अर्ध शताब्दी का आयोजन हुआ तब कुछ संन्यासियों ने स्वामी सर्वदानन्दजी से निवेदन किया कि वे महात्मा हंसराज जी को संन्यास दीक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करें। तब वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वदानन्दजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि निर्द्वन्द्व तथा सभी प्रकार की सांसारिक एषणाओं से मुक्त महात्मा हंसराज जी किसी भी कमण्डलुधारी संन्यासी से कम नहीं है। महात्मा हंसराज का जीवन त्याग का एक अनुपम उदाहरण है। उन्होंने 25 वर्ष तक डी.ए.वी. स्कूल और कॉलेज के प्रिंसिपल के पद पर रहते हुए अवैतनिक सेवा की। जो व्यक्ति प्रतिमास हजारों रूपये वेतन के रूप में बाँटकर स्वयं खाली हाथ घर लौटे इससे बड़े त्याग का उदाहरण और क्या हो सकता है?

महर्षि दयानन्द का स्वर्गवास होने पर आर्यसमाज लाहौर में शोकसभा हुई, जिसमें निश्चय किया गया कि इस महापुरुष की पुण्यस्मृति में आधुनिक और प्राचीन शिक्षा देने के लिए दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज स्थापित किया जाए, परन्तु चार वर्ष में भी यथेष्ट धन-राशि एकत्र नहीं हो सकी। उस समय हंसराज ने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। जब वे दशम कक्षा में पढ़ रहे थे तभी स्वामी दयानन्दजी के सत् साहित्य को पढ़कर उन्होंने उससे प्रभावित होकर उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में क्रियान्वित करने का निश्चय किया। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय उनके सहपाठी थे। इन तीनों ने आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण कर ली।

दाना खाक में मिलकर ही अंकुरित होता है। किसी भी योजना को सफल बनाने के लिए अपने अस्तित्व को मिटाना पड़ता है। उन्होंने निश्चय किया कि मैं डी.ए.वी. स्कूल में अवैतनिक रहते हुए अध्यापन करूँगा। उन दिनों सरकारी नौकरियाँ शिक्षित युवकों को मिलना कठिन नहीं था, परन्तु जिसने ऋषि-मिशन को आगे बढ़ाने का संकल्प कर लिया हो उसके लिए ये सारे प्रलोभन महत्त्वहीन थे। परिणामस्वरूप डी.ए.वी. स्कूल प्रारम्भ हो गया। हंसराज जी को मुख्याध्यापक और बाद में कॉलेज का प्रिंसिपल बनाया गया।

डी.ए.वी. स्कूल तो चल निकला, परन्तु घर का चलाना सरल कार्य नहीं था। उनके पिता का पहले ही स्वर्गवास हो चुका था। घर में माता, पत्नी और बच्चों का दायित्व वहन करना सबसे बड़ी बाधा थी, परन्तु **बाधायें कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को।** उनके बड़े भाई लाला मुल्कराज बैंक में नौकरी करते थे। उन्हें 80 रूपये वेतन मिलता था। छोटे भाई के निश्चय को सुनकर वे गद्‌गद हो गये और बोले-यदि तुम धर्म और जाति की सेवा करने के लिए इतना त्याग कर सकते हो तो मुझे भी कुछ त्याग करना चाहिए। मैं तुम्हें अपने वेतन का आधा भाग 40 रूपये मासिक देता रहूँगा, तुम निश्चिन्त होकर सेवा में लगे रहो। उस दिन हंसराज जी को देर तक नींद नहीं आई। वे गायत्री-मन्त्र का जप और प्रभु का धन्यवाद करते रहे। अपने बड़े भाई के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता प्रकट करने के लिए वे वृद्धावस्था में भी प्रतिदिन उन्हें अभिवादन करने के लिए जाते रहे।

प्राचार्य पद पर रहते हुए उन्होंने अत्यन्त सादगी का जीवन व्यतीत किया। वे कार्यालय में पैदल ही आते थे। समय की पाबन्दी का कड़ाई से पालन करते ये। कॉलेज के समय अपना निजी काम नहीं करते थे। जब उन्हें अपना निजी पत्र या और कुछ लिखना होता तो वे कॉलेज की कलम, दवात और कागज तक का प्रयोग नहीं करते थे।

शास्त्र की यह उक्ति उनपर पूर्णरूपेण चरितार्थ होती थी-

**सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं मतम्।**
**यो अर्थे शुचिः सः शुचिर्नमृद्वारिशुचिः शुचिः॥**

सभी प्रकार के शौच (शुद्धि) में जो धन के विषय में ईमानदार है, वही पवित्र कहलाने का अधिकारी है। केवल नहाने-धोनेमात्र से कोई पवित्र नहीं होता।

कोई व्यक्ति उन्हें कुछ भेंट करता तो वे उसे बिकवाकर उसकी राशि कॉलेज के कोश में जमा करवा देते थे। रविवार या गर्मी की छुट्टियों में जब वे वैदिक धर्म के प्रचार के लिए जाते तो गाड़ी के तीसरे दर्जे में ही यात्रा करते थे। उनके तप, त्याग, सादगी और सरल व्यवहार को देखकर ही लोगों ने उन्हें महात्मा हंसराज कहना शुरु किया। वे इस सम्मान के सर्वथा योग्य थे भी।

महात्मा हंसराज जी ऋषि दयानन्द के परम भक्त थे। एक बार स्वामी भीष्मजी ने उनसे पूछा कि आपने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये हैं तो महात्मा ने कहा कि यदि मैंने उनके दर्शन किये होते तो मेरी आँखें खराब क्यों होती। **'अग्नि अग्निः समिध्यते'** अग्नि से ही अग्नि प्रज्वलित होती है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द और पं. लेखराम युवावस्था में स्वामी दयानन्दजी के सम्पर्क में आकर स्वयं ऋषि के दीवाने हो गये और तीनों ने आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अपना तन-मन-धन सभी कुछ समर्पित कर दिया। काश! महात्मा हंसराज जी भी यदि ज्ञान के सूर्य स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये होते तो उनकी जीवन-ज्योति जगमगा उठती और तब डी.ए.वी. संस्थाओं का इतिहास कुछ और ही होता, परन्तु उनका त्याग अद्वितीय है इसमें कोई सन्देह नहीं। 25 वर्ष तक उन्होंने प्रधानाचार्य पद पर रहकर अड़तालीस वर्ष की आयु में इस पद से अवकाश ग्रहण कर लिया।

कॉलेज से अवकाश लेकर उन्होंने अपना ध्यान सामाजिक कार्यो में केन्द्रित किया। वे स्त्री-शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। इसके लिए उन्होंने लाहौर में महिला महाविद्यालय की स्थापना की। बाल-विवाह को रोकने के लिए उन्होंने सभा द्वारा आन्दोलन किया। विधवा-विवाह को प्रचलित करने में भी बहुत प्रयत्न किया। वेदप्रचार के लिए आर्य प्रादेशिक सभा की स्थापना की। उस समय इस सभा में 100 प्रचारक थे। इन उपदेशकों के कारण पंजाब और सीमान्त प्रदेश में वेद-प्रचार की धूम मच गई। जब राजस्थान और मध्य भारत में 1895 में भीषण अकाल पड़ा तब उन्होंने वहाँ पहुँच कर लाखों लोगों को मृत्यु के मुख में जाने से बचाया। ऐसे ही कांगड़ा का भूकम्प, कोयटा और बिहार का विनाशकारी भूकम्प, मुल्तान में प्लेग की बीमारी, उड़ीसा का अकाल और मलाबार में मोपला मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं का नरसंहार और उन्हें बलपूर्वक मुसलमान बना लिये जाने पर महात्मा हंसराज ने अनेक राहत कार्यक्रम चलाये। नलाबार में जबरत मुसलमान बनाये गये, हिन्दुओं को पुनः शुद्ध करके हिन्दूधर्म में प्रविष्ट किया। आगरा क्षेत्र में दो-ढाई लाख मलकाने राजपूतों की शुद्धि में उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द और पं. मदनमोहन मालवीय के साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर योगदान दिया।

1926 ई. में स्वामी श्रद्धानन्दजी का बलिदान एक धर्मान्ध युवक द्वारा हो जाने पर सन 1927 में दिल्ली में प्रथम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। महात्मा हंसराज को उसका अध्यक्ष बनाया गया। उसी समय आर्यजनों ने यह निश्चय किया कि अपने नेताओं एवं सम्मेलनादि की सुरक्षा के लिए आर्य-रक्षा-वाहिनी का गठन होना चाहिए। महात्मा नारायण स्वामी को यह जिम्मेदारी दी गई। बाद में इस संगठन का नाम आर्य-वीरदल रक्खा गया।

52 वर्ष तक देश, धर्म और जाति की निष्काम सेवा करते हुए तप-त्याग का यह सूर्य 15 नवम्बर सन् 1938 को अस्त हो गया। उनकी यश-कीर्ति अब भी अक्षुण्ण है। आज देशभर में डी.ए.वी. संस्थाओं का जाल फैला हुआ है। यदि इसके अधिकारी महात्मा हंसराज जी के पद्चिन्हों पर चलने का संकल्प लें तो आर्यसमाज और राष्ट्र का कायाकल्प हो सकता है।

**-आचार्य चांद सिंह के सौजन्य से प्राप्त**

# आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

## दान सूची

| | |
|---|---|
| श्री महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच., कीर्ति नगर दि. | 31000/- |
| श्री रवि जी आर्य अंजली प्रोपर्टीज सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 11000/- |
| श्री अशोक कुमार जी गुप्ता पूर्व चेयरमैन नगर परिषद.बहा. | 11000/- |
| श्री रविन्द्र नाथ जी हसिजा गुड़गांव, हरियाणा | 5100/- |
| श्रीमती कृष्णा देवी जी धर्म. कृष्ण चंद्र जी रखेजा, गुड़. | 3100/- |
| कुमारी मेघाली सु. श्री बिजेन्द्र पाराशर बराही रोड, बहा. | 3000/- |
| श्री खुशी एवं नमन जी दलाल टांडा हेडी, बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्री विकास जी बंसल सैक्टर-11, रोहिणी दिल्ली | 2100/- |
| श्री राधेश्याम जी आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्री ब्रह्म प्रकाश जी आर्य सैक्टर-9, बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्री हरकमल जी ओमैक्स सीटी बहादुरगढ़ | 2000/- |
| श्री मोनू जून गुरु नानक कॉलोनी, बहादुरगढ़ | 2000/- |
| श्रीमती निर्मला देवी धर्म. पं. नथूराम जी गुरु नानक कॉ.,बहा. | 2000/- |
| श्रीमती कपूरी देवी छिल्लर सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 2000/- |
| श्री कन्हैया लाल जी आर्य गुडगांव द्वारा संग्रह | 1717/- |
| श्री अशोक कुमार जी जून नूना माजरा, बहादुरगढ़ | 1111/- |
| श्री हरिओम् जी राणा धर्मपुरा बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री डॉ. भूदेव जी देव नगर झज्जर रोड, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री राजेश जी मलिक सैक्टर-2, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री नक्ष चड्डा जी सुपुत्र श्री वरूण जी चड्डा राजौरी गा.दि. | 1100/- |
| श्री दिलबाग सिंह जी गुलिया सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री ऋषि जी बत्तरा सुपुत्र श्री कमल किशोरजी बत्तरा मॉडल टाऊन रोहतक, हरियाणा | 1100/- |
| श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य काठमंडी बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्रीमती सांना देवी आर्या सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री सोनू जी शौकिन सुपुत्र श्री सत्यपाल जी शौकिन मंगोलपुर, खूर्द, दिल्ली | 1000/- |
| श्रीमती रामदुलारी बसंल जी वैदिक वृद्ध आश्रम बहादुरगढ़ | 1000/- |
| श्रीमती शकुंतला देवी धर्मपत्नी राम किशन जी सोहना गुड. | 1000/- |
| श्रीमती मालविका एवं संजू डबास पूठ खूरद दिल्ली | 600/- |
| श्री पं. जयभगवान जी आर्य झज्जर, हरियाणा | 555/- |
| श्री रमेश कुमार जी जाखड़ा मैट्रो कॉलोनी, सैक्टर-9, बहा. | 551/- |
| श्री मा. धूप सिंह जी गुलिया बादली झज्जर हरियाणा | 505/- |
| श्रीमती विमला देवी सिंघल वैदिक वृद्धआश्रम बहादुरगढ़ | 501/- |
| श्री ओ.पी. सहरावत वैदिक वृद्ध आश्रम बहादुरगढ़ | 501/- |
| श्रीमती वेद कौर जी धर्म. श्री मां. सरूप सिंह जी छावला दि. | 501/- |
| श्री बलवीर सिंह जी मलिक रोहतक, हरियाणा | 500/- |
| श्री राज कर्ण जी आर्य प्रधान आर्य समाज बादली झज्जर | 500/- |
| श्री मा.हरि सिंह जी दहिया बराही रोड, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट गुड़गांव हरियाणा | 500/- |
| श्री राजवीर जी आर्य धर्म विहार, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री पंकज जी महता शिवाजी नगर, गुड़गांव | 500/- |
| श्री राजेश जी राठी सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री ओम-प्रकाश मलिक रोहिणी दिल्ली | 500/- |
| श्री जयपाल जी आर्य (प्रिसिंपल) महामन्त्री आर्य समाज सैक्टर-7, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री पदमचंद जी आर्य गुड़गांव हरियाणा | 500/- |
| श्री चांद सिंह जी आर्य लौहा रेडी, बहादुरगढ़ | 500/- |
| कुमारी इंदु कटारिया भाग्य विहार दिल्ली | 500/- |
| श्रीमती सोन बेरी गांव छपरौली जिला-बागपत उत्तर प्रदेश | 500/- |

## गौशाला हेतु दान

| | |
|---|---|
| श्री सतीश जी वर्मा, ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री रमन, नरूला, सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री निशांक वत्स सु. श्री श्रद्धानन्द जी वत्स महावीर इंक्लेव,दि. | 500/- |
| श्री मंगत राम जी शर्मा सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्रीमती शान्ता देवी जी आध्यापिका धर्मपत्नी श्री महावीर सिंह जी काठमण्डी | 500/- |

## विविध वस्तुएं

| | |
|---|---|
| श्री राज कर्ण जी आर्य प्रधान आर्य समाज बादली | अन्न के लिए 2000 रूपये |
| मै. पुरी ऑयल मील बहादुरगढ़ | एक टीन तेल |
| श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टीकरी कला दिल्ली | एक कनस्तर सरसो तेल |
| श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली | 10 किलो तेल |

## एक समय विशिष्ट भोजन देने वाले

श्री तुषार जी गुलिया काठमण्डी बहादुरगढ़
श्री मोनू जी जून गुरु नानक कॉलोनी, बहादुरगढ़
श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़
श्री रवि जी आर्य अंजली प्रोपर्टीज सैक्टर-6, बहादुरगढ़
श्री यश दीप एवं प्रेरणा नवज्योति कलीनिक नजफगढ़ रोड, बहादुरगढ़
श्री राजपालजी मलिक परिवार सैक्टर-9, बहादुरगढ़
श्री निशांक वत्स सुपुत्र श्रद्धानन्द जी वत्स महावीर कॉलोनी दिल्ली
श्री कैप्टन महेन्द्र पंवार जी अमेरिका वाले वैदिक वृद्ध आश्रम बहादुरगढ़
31/03/2019 यज्ञ पूर्ण आहुती एवं योग साधना शिविर समापन समारोह की सर्व भोजन व्यवस्था की गई।

**मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 अप्रैल 2019 को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

# बसंत ऋतु यज्ञ एवं योग साधना शिविर की सुन्दर झलकियां

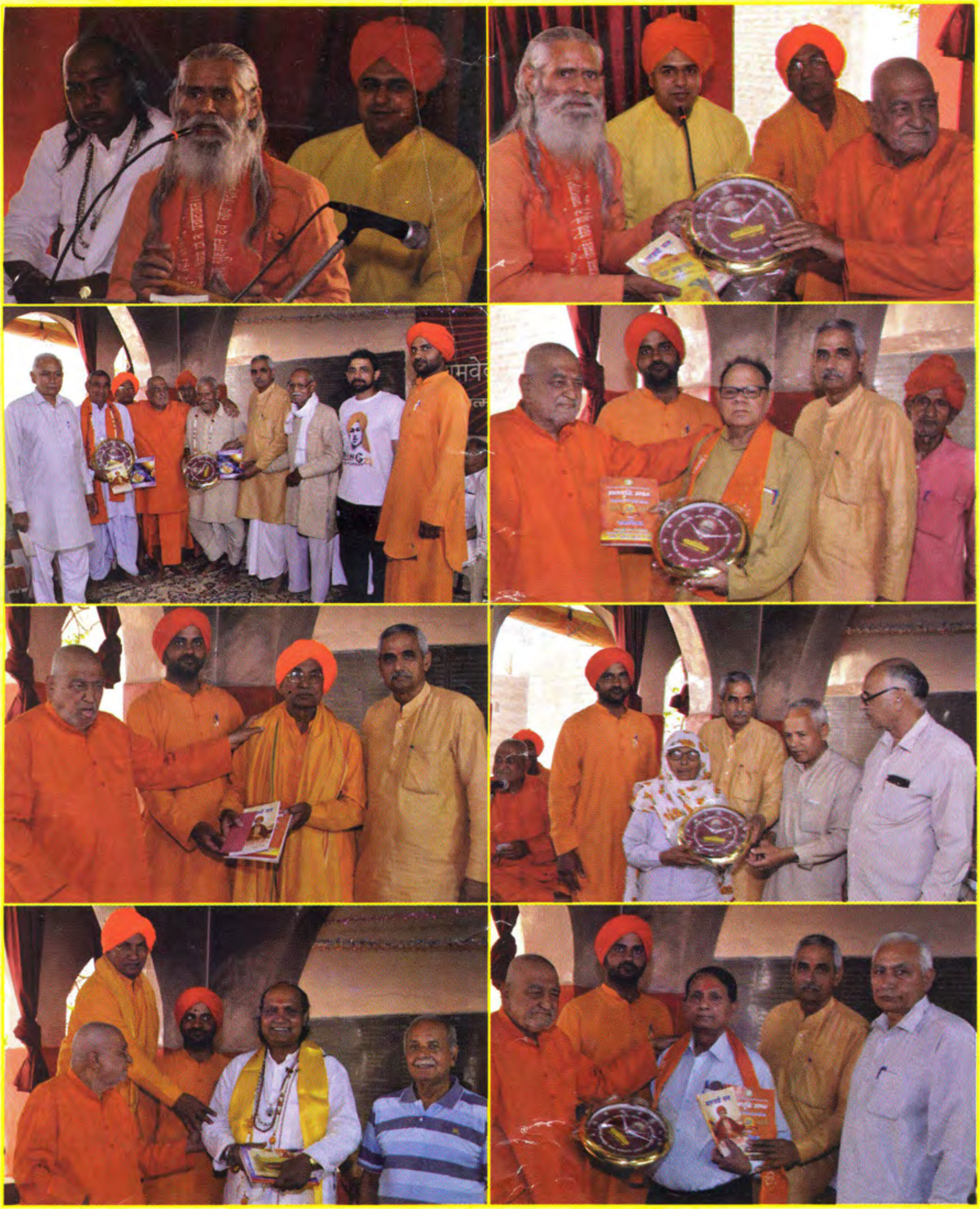

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

अप्रैल 2019

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

# बसंत ऋतु यज्ञ एवं योग साधना शिविर की सुन्दर झलकियां

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

श्री अशोक कुमार जी गुप्ता को सम्मानित करते हुए

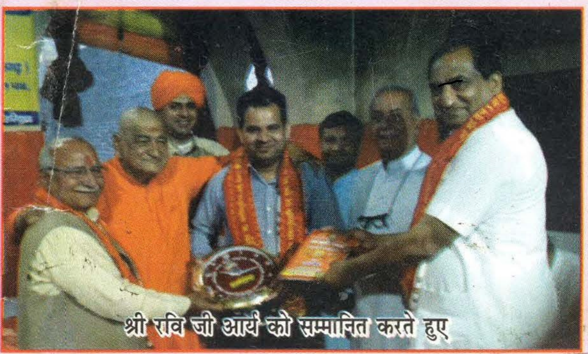

श्री रवि जी आर्य को सम्मानित करते हुए

दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्री कन्हैया लाल जी आर्य

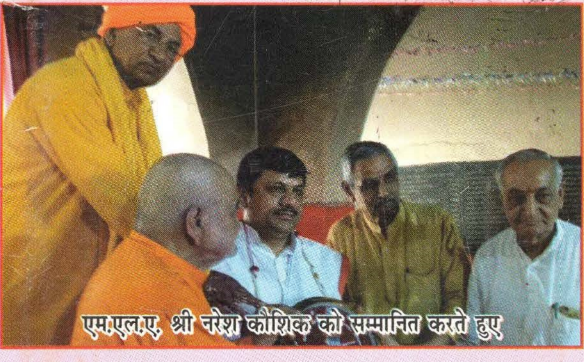

एम.एल.ए. श्री नरेश कौशिक को सम्मानित करते हुए

कैप्टन महेन्द्र सिंह पंवार को सम्मानित करते हुए

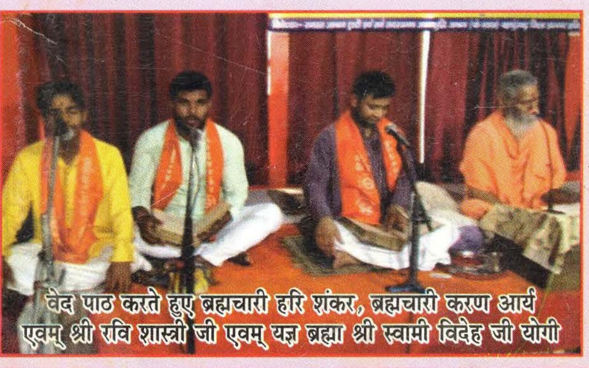

वेद पाठ करते हुए ब्रह्मचारी हरि शंकर, ब्रह्मचारी करण आर्य
एवम् श्री रवि शास्त्री जी एवम् यज्ञ ब्रह्मा श्री स्वामी विदेह जी योगी